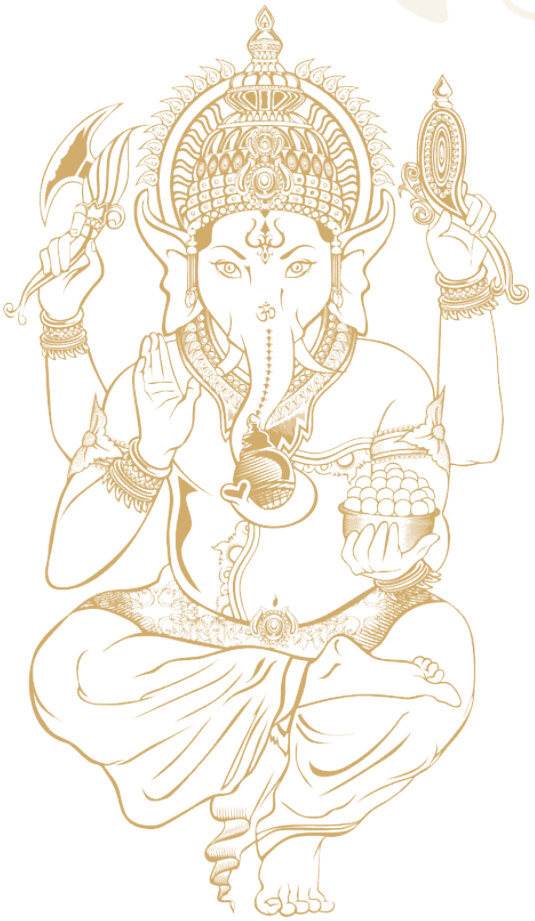

# Lakshdip Rajendra Patil

10 Apr 2005

01:00 PM

Jalgaon

**Model: Web-KundliPhal** **Order No: 119045701**

# सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

| | |
|---|---|
| लिंग | पुल्लिंग |
| **जन्म तिथि** | **10/04/2005** |
| दिवस | रविवार |
| **जन्म समय** | **13:00:00 कला** |
| इष्ट | 16:57:07 घटी |
| **स्थान** | **Jalgaon** |
| राज्य | Maharashtra |
| देश | India |

| | |
|---|---|
| अक्षांश | 21:01:00 उत्तर |
| रेखांश | 75:39:00 पूर्व |
| मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| स्थानिक संस्कार | -00:27:24 कला |
| ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 कला |
| स्थानिक वेल | 12:32:36 कला |
| वेलान्तर | -00:01:19 कला |
| साम्पातिक वेल | 01:47:08 कला |
| सूर्योदय | 06:13:09 कला |
| सूर्यास्त | 18:44:40 कला |
| दिनमान | 12:31:31 कला |
| सूर्य स्थिति(अयन) | उत्तरायण |
| सूर्य स्थिति(गोल) | उत्तर |
| ऋतु | वसन्त |
| सूर्याचे अंश | 26:36:05 मीन |
| लग्नाचे अंश | 08:27:24 कर्क |

**अवकहड़ा चक्र**

| | |
|---|---|
| लग्न–लग्नाधिपति | कर्क – चन्द्र |
| **राशि–स्वामी** | **मेष – मंगळ** |
| **नक्षत्र–चरण** | **भरणी – 1** |
| नक्षत्र स्वामी | शुक्र |
| योग | विष्कुम्भ |
| करण | कौलव |
| गण | मनुष्य |
| योनि | गज |
| नाड़ी | मध्य |
| वर्ण | क्षत्रिय |
| वश्य | चतुष्पाद |
| वर्ग | मृग |
| युँजा | पूर्व |
| हंसक | अग्नि |
| जन्म नामाक्षर | ली–लीलाधर |
| पाया(राशि–नक्षत्र) | ताम्र – स्वर्ण |
| सूर्य राशि(पाश्चात्य) | मेष |

# पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

| कैलेंडर | वर्ष | माह | तिथि/प्रविष्टे |
|---|---|---|---|
| राष्ट्रीय | शक : 1927 | चैत्र | 20 |
| पंजाबी | संवत : 2061 | चैत्र | 28 |
| बंगाली | सन् : 1411 | चैत्र | 27 |
| तमिल | संवत : 2061 | पांगुनी | 28 |
| केरल | कोल्लम : 1180 | मिनम | 27 |
| नेपाली | संवत : 2061 | चैत्र | 28 |
| चैत्रादी | संवत : 2062 | चैत्र | शुक्ल 2 |
| कार्तिकादी | संवत : 2062 | चैत्र | शुक्ल 2 |

## पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 2
तिथि समाप्ति वेल _____: 24:28:53
जन्म तिथि _____: 2
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: अश्विनी
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 10:22:54 कला
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय समयी योग _____: विष्कुम्भ
योग समाप्ति वेल _____: 16:18:14 कला
जन्म योग _____: विष्कुम्भ
सूर्योदय समयी करण _____: बालव
करण समाप्ति वेल _____: 12:39:09 कला
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 06:32:45
भभोग _____: 61:03:42
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 17 वर्ष 9 मा 29 दि

## घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिवस _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
रवि _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगळ _____: सिंह
बुध _____: वृषभ
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुंडली

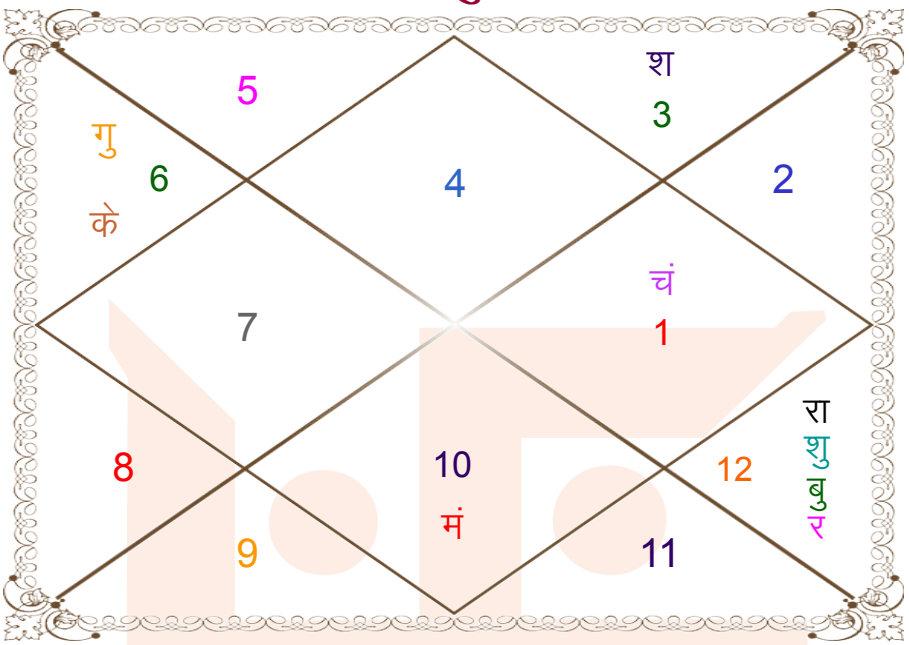


## चन्द्र कुंडली

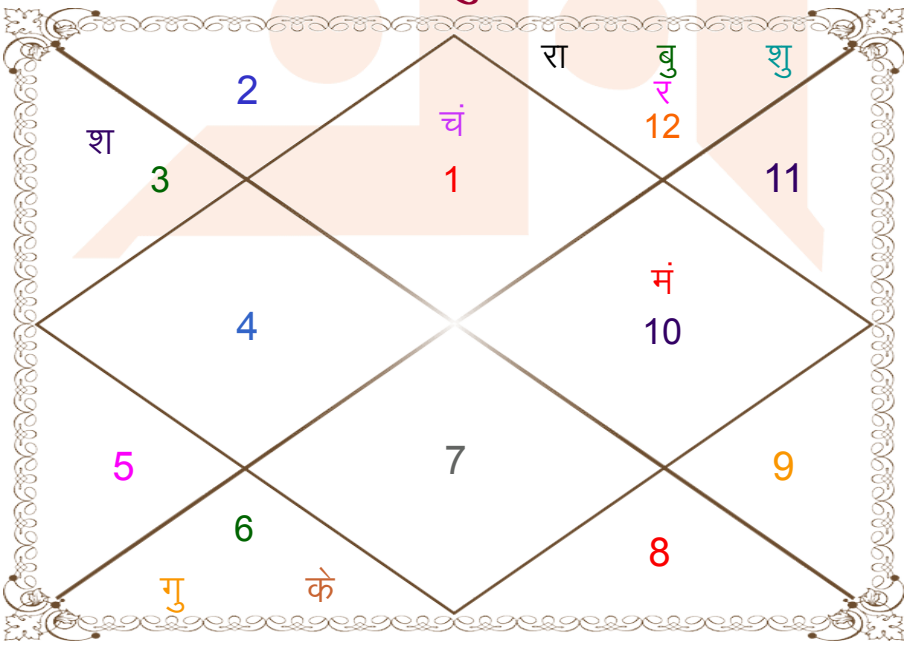


**Vedic Wisdom Path**
Hyderabad
9492523219
spvedicgyan@gmail.com

# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

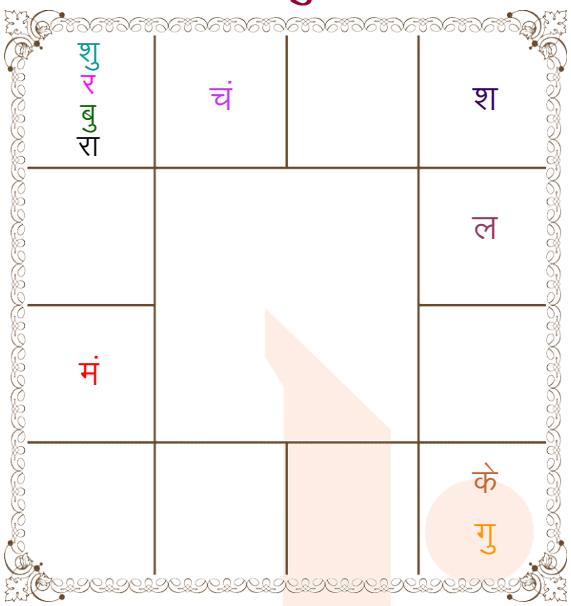


## लग्न कुंडली

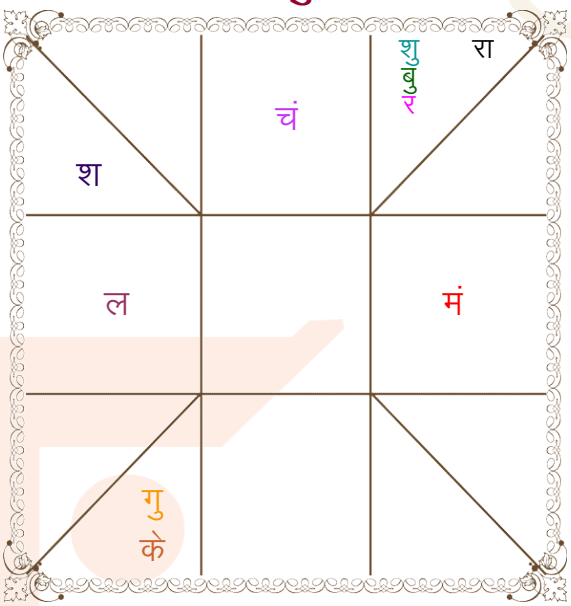


## विंशोत्तरी

**शुक्र 17वर्ष 9मा 29दि**

**शुक्र**

**10/04/2005**

**09/02/2123**

| | |
|---|---|
| शुक्र | 08/02/2023 |
| रवि | 08/02/2029 |
| चन्द्र | 08/02/2039 |
| मंगळ | 08/02/2046 |
| राहु | 08/02/2064 |
| गुरु | 08/02/2080 |
| शनि | 08/02/2099 |
| बुध | 09/02/2116 |
| केतु | 09/02/2123 |

## योगिनी

**भद्रिका 4वर्ष 5मा 15दि**

**संकटा**

**25/09/2022**

**25/09/2030**

| | |
|---|---|
| संकटा | 05/07/2024 |
| मंगळा | 24/09/2024 |
| पिंगला | 05/03/2025 |
| धान्या | 04/11/2025 |
| भ्रामरी | 25/09/2026 |
| भद्रिका | 04/11/2027 |
| उल्का | 05/03/2029 |
| सिद्धा | 25/09/2030 |

# ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

| ग्रह | व | अ | राशि | अंश | गति | नक्षत्र | पद | नं. | रा | न | अं. | स्थिति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| लग्न | | | कर्क | 08:27:24 | 318:37:03 | पुष्य | 2 | 8 | चंद्र | शनि | शुक्र | ——— |
| सूर्य | | | मीन | 26:36:05 | 00:58:56 | रेवती | 3 | 27 | गुरु | बुध | गुरु | मित्र राशि |
| चंद्र | | | मेष | 14:46:43 | 13:13:49 | भरणी | 1 | 2 | मंगळ | शुक्र | शुक्र | सम राशि |
| मंगळ | | | मक | 20:57:52 | 00:43:34 | श्रवण | 4 | 22 | शनि | चंद्र | शुक्र | उच्च राशि |
| बुध | व | | मीन | 07:59:50 | 00:10:48 | उ.भाद्रपद | 2 | 26 | गुरु | शनि | केतु | नीच राशि |
| गुरु | व | | कन्या | 19:11:13 | 00:07:37 | हस्त | 3 | 13 | बुध | चंद्र | बुध | शत्रु राशि |
| शुक्र | | अ | मीन | 29:12:10 | 01:14:21 | रेवती | 4 | 27 | गुरु | बुध | शनि | उच्च राशि |
| शनि | | | मिथु | 26:48:09 | 00:02:05 | पुनर्वसु | 3 | 7 | बुध | गुरु | शुक्र | मित्र राशि |
| राहु | | | मीन | 28:49:26 | 00:00:04 | रेवती | 4 | 27 | गुरु | बुध | शनि | सम राशि |
| केतु | | | कन्या | 28:49:26 | 00:00:04 | चित्रा | 2 | 14 | बुध | मंगळ | शनि | शत्रु राशि |
| हर्ष | | | कुंभ | 15:11:35 | 00:02:47 | शतभिषा | 3 | 24 | शनि | राहु | केतु | ——— |
| नेप | | | मक | 23:14:58 | 00:01:15 | श्रवण | 4 | 22 | शनि | चंद्र | सूर्य | ——— |
| प्लूटो | व | | धनु | 00:31:56 | 00:00:27 | मूल | 1 | 19 | गुरु | केतु | केतु | ——— |
| दशम भाव | | | मेष | 04:53:14 | -- | अश्विनी | -- | 1 | मंगळ | केतु | मंगळ | -- |

व – वक्री  स – स्थिर
अ – अस्त  पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
**लाहिरी अयनांश : 23:55:43**

## लग्न–चलित

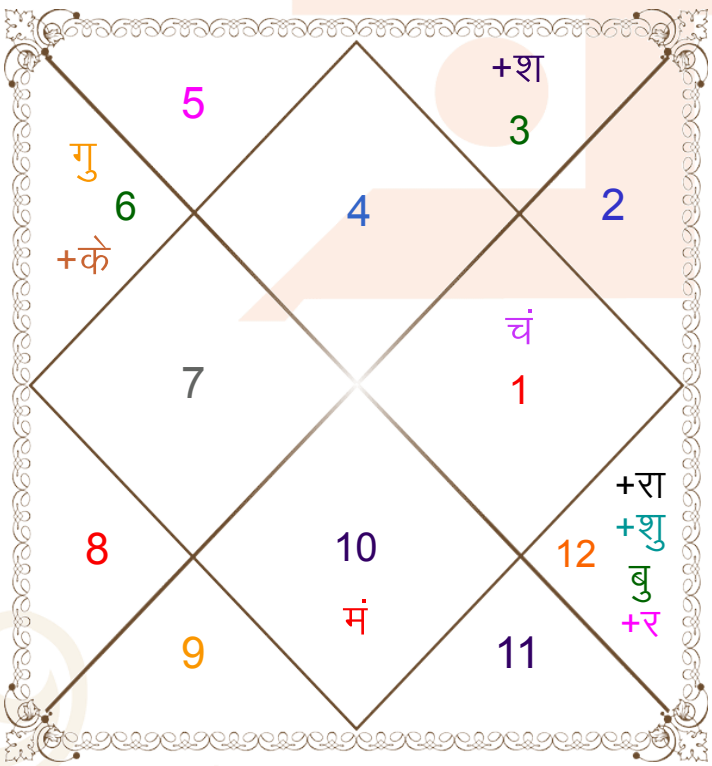


## चन्द्र कुंडली

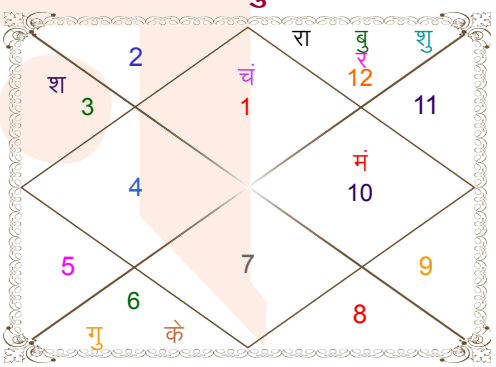


## नवमांश कुंडली

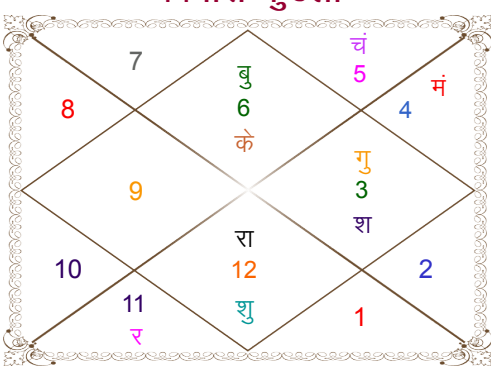



**Vedic Wisdom Path**
Hyderabad
9492523219
spvedicgyan@gmail.com

# चलित तथा निरयण भाव चलित

## चलित अंश

| भाव | भाव संधि | | भाव मध्य | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | मिथुन | 22:51:42 | कर्क | 08:27:24 |
| 2 | कर्क | 22:51:42 | सिंह | 07:16:01 |
| 3 | सिंह | 21:40:19 | कन्या | 06:04:37 |
| 4 | कन्या | 20:28:56 | तुला | 04:53:14 |
| 5 | तुला | 20:28:56 | वृश्चिक | 06:04:37 |
| 6 | वृश्चिक | 21:40:19 | धनु | 07:16:01 |
| 7 | धनु | 22:51:42 | मकर | 08:27:24 |
| 8 | मकर | 22:51:42 | कुम्भ | 07:16:01 |
| 9 | कुम्भ | 21:40:19 | मीन | 06:04:37 |
| 10 | मीन | 20:28:56 | मेष | 04:53:14 |
| 11 | मेष | 20:28:56 | वृषभ | 06:04:37 |
| 12 | वृषभ | 21:40:19 | मिथुन | 07:16:01 |

## निरयण भाव चलित

| भाव | राशि | अंश |
|---|---|---|
| 1 | कर्क | 08:27:24 |
| 2 | सिंह | 03:51:30 |
| 3 | कन्या | 02:44:51 |
| 4 | तुला | 04:53:14 |
| 5 | वृश्चिक | 07:42:51 |
| 6 | धनु | 08:58:28 |
| 7 | मकर | 08:27:24 |
| 8 | कुम्भ | 03:51:30 |
| 9 | मीन | 02:44:51 |
| 10 | मेष | 04:53:14 |
| 11 | वृषभ | 07:42:51 |
| 12 | मिथुन | 08:58:28 |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा |
| पू.फाल्गुनी | उ.फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल |
| पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू.भाद्रपद | उ.भाद्रपद | रेवती | अश्विनी |

## चलित कुंडली

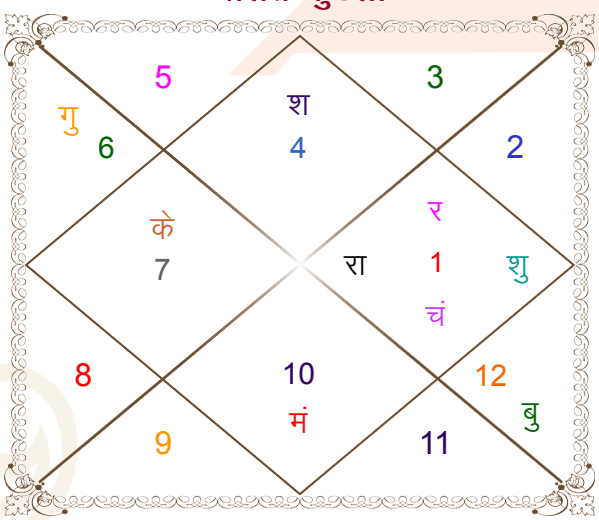


## भाव कुंडली

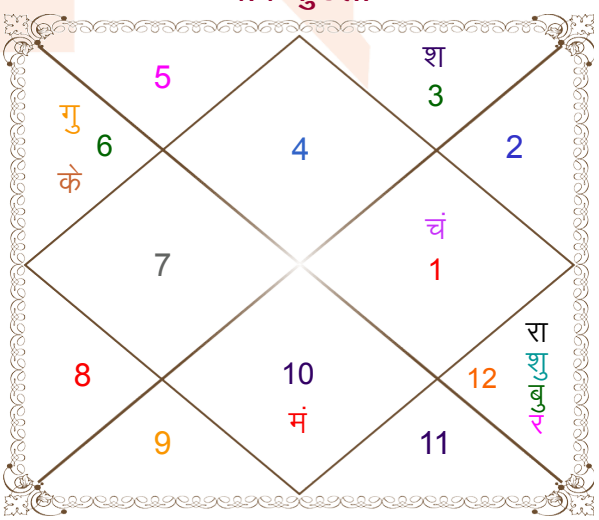



**Vedic Wisdom Path**
Hyderabad
9492523219
spvedicgyan@gmail.com

# कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह | ——— कारक ——— | | ——— अवस्था ——— | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | चर | स्थिर | बालादि | दीप्तादि | शयनादि | रश्मि | ग्रह बल |
| सूर्य | भ्रातृ | पितृ | बाल | मुदित | नृत्यलिप्सा | 9.26 | 79 % |
| चंद्र | ज्ञाति | मातृ | युवा | निपीदित | आगमन | 9.71 | 42 % |
| मंगळ | मातृ | भ्रातृ | कुमार | दीप्त | प्रकाश | 14.41 | 35 % |
| बुध | कलत्र | ज्ञाति | वृद्ध | भीत | नृत्यलिप्सा | 0.10 | 60 % |
| गुरु | पुत्र | धन | कुमार | खल | प्रकाश | 1.65 | 23 % |
| शुक्र | आत्मा | कलत्र | बाल | विकल | प्रकाश | 23.71 | 32 % |
| शनि | अमात्य | आयुष्य | मृत | मुदित | सभा | 2.47 | 41 % |
| राहु | ——— | ज्ञान | बाल | शान्त | नृत्यलिप्सा | 0.00 | 42 % |
| केतु | ——— | मोक्ष | बाल | खल | प्रकाश | 0.00 | 42 % |
| **एकुण** | | | | | | **61.30** | |

## तारा चक्र

| जन्म | सम्पत | विपत | क्षेम | प्रत्यारि | साधक | वध | मित्र | अतिमित्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भरणी | कृतिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा |
| पू.फाल्गुनी | उ.फाल्गुनी | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल |
| पूर्वाषाढ़ा | उत्तराषाढ़ा | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू.भाद्रपद | उ.भाद्रपद | रेवती | अश्विनी |

## चलित कुंडली

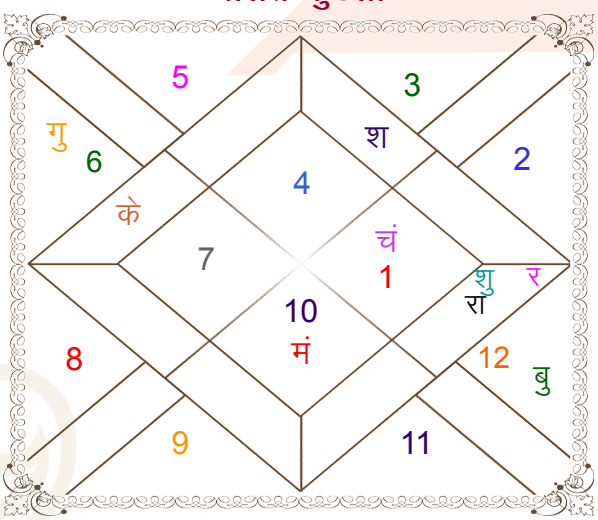


## लग्न–चलित

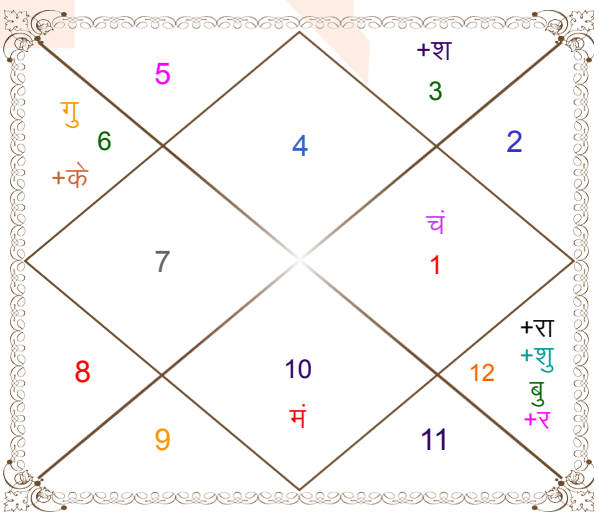



**Vedic Wisdom Path**
Hyderabad
9492523219
spvedicgyan@gmail.com

# विंशोत्तरी दशा

## भोग्य दशा वेल : शुक्र 17 वर्ष 9 महिना 29 दिवस

| शुक्र 20 वर्ष | | सूर्य 6 वर्ष | | चंद्र 10 वर्ष | | मंगळ 7 वर्ष | | राहु 18 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10/04/2005 | | 08/02/2023 | | 08/02/2029 | | 08/02/2039 | | 08/02/2046 | |
| 08/02/2023 | | 08/02/2029 | | 08/02/2039 | | 08/02/2046 | | 08/02/2064 | |
| शुक्र | 10/06/2006 | सूर्य | 29/05/2023 | चंद्र | 09/12/2029 | मंगळ | 07/07/2039 | राहु | 21/10/2048 |
| सूर्य | 10/06/2007 | चंद्र | 27/11/2023 | मंगळ | 10/07/2030 | राहु | 25/07/2040 | गुरु | 17/03/2051 |
| चंद्र | 08/02/2009 | मंगळ | 03/04/2024 | राहु | 09/01/2032 | गुरु | 01/07/2041 | शनि | 21/01/2054 |
| मंगळ | 10/04/2010 | राहु | 26/02/2025 | गुरु | 10/05/2033 | शनि | 10/08/2042 | बुध | 09/08/2056 |
| राहु | 10/04/2013 | गुरु | 15/12/2025 | शनि | 09/12/2034 | बुध | 07/08/2043 | केतु | 28/08/2057 |
| गुरु | 10/12/2015 | शनि | 27/11/2026 | बुध | 10/05/2036 | केतु | 03/01/2044 | शुक्र | 27/08/2060 |
| शनि | 08/02/2019 | बुध | 04/10/2027 | केतु | 09/12/2036 | शुक्र | 04/03/2045 | सूर्य | 22/07/2061 |
| बुध | 09/12/2021 | केतु | 08/02/2028 | शुक्र | 10/08/2038 | सूर्य | 10/07/2045 | चंद्र | 21/01/2063 |
| केतु | 08/02/2023 | शुक्र | 08/02/2029 | सूर्य | 08/02/2039 | चंद्र | 08/02/2046 | मंगळ | 08/02/2064 |

| गुरु 16 वर्ष | | शनि 19 वर्ष | | बुध 17 वर्ष | | केतु 7 वर्ष | | शुक्र 20 वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 08/02/2064 | | 08/02/2080 | | 08/02/2099 | | 09/02/2116 | | 09/02/2123 | |
| 08/02/2080 | | 08/02/2099 | | 09/02/2116 | | 09/02/2123 | | 00/00/0000 | |
| गुरु | 29/03/2066 | शनि | 11/02/2083 | बुध | 08/07/2101 | केतु | 08/07/2116 | शुक्र | 11/04/2125 |
| शनि | 09/10/2068 | बुध | 21/10/2085 | केतु | 05/07/2102 | शुक्र | 07/09/2117 | | 00/00/0000 |
| बुध | 15/01/2071 | केतु | 30/11/2086 | शुक्र | 05/05/2105 | सूर्य | 13/01/2118 | | 00/00/0000 |
| केतु | 22/12/2071 | शुक्र | 30/01/2090 | सूर्य | 11/03/2106 | चंद्र | 14/08/2118 | | 00/00/0000 |
| शुक्र | 22/08/2074 | सूर्य | 12/01/2091 | चंद्र | 11/08/2107 | मंगळ | 10/01/2119 | | 00/00/0000 |
| सूर्य | 10/06/2075 | चंद्र | 12/08/2092 | मंगळ | 07/08/2108 | राहु | 28/01/2120 | | 00/00/0000 |
| चंद्र | 09/10/2076 | मंगळ | 21/09/2093 | राहु | 24/02/2111 | गुरु | 03/01/2121 | | 00/00/0000 |
| मंगळ | 15/09/2077 | राहु | 28/07/2096 | गुरु | 01/06/2113 | शनि | 12/02/2122 | | 00/00/0000 |
| राहु | 08/02/2080 | गुरु | 08/02/2099 | शनि | 09/02/2116 | बुध | 09/02/2123 | | 00/00/0000 |

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 17 वर्ष 10 मा 8 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| सूर्य - गुरु | | सूर्य - शनि | | सूर्य - बुध | | सूर्य - केतु | | सूर्य - शुक्र | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **26/02/2025** | | **15/12/2025** | | **27/11/2026** | | **04/10/2027** | | **08/02/2028** | |
| **15/12/2025** | | **27/11/2026** | | **04/10/2027** | | **08/02/2028** | | **08/02/2029** | |
| गुरु | 06/04/2025 | शनि | 08/02/2026 | बुध | 10/01/2027 | केतु | 11/10/2027 | शुक्र | 09/04/2028 |
| शनि | 22/05/2025 | बुध | 29/03/2026 | केतु | 28/01/2027 | शुक्र | 01/11/2027 | सूर्य | 28/04/2028 |
| बुध | 03/07/2025 | केतु | 18/04/2026 | शुक्र | 21/03/2027 | सूर्य | 08/11/2027 | चंद्र | 28/05/2028 |
| केतु | 20/07/2025 | शुक्र | 15/06/2026 | सूर्य | 06/04/2027 | चंद्र | 18/11/2027 | मंगळ | 18/06/2028 |
| शुक्र | 06/09/2025 | सूर्य | 03/07/2026 | चंद्र | 01/05/2027 | मंगळ | 26/11/2027 | राहु | 12/08/2028 |
| सूर्य | 21/09/2025 | चंद्र | 01/08/2026 | मंगळ | 19/05/2027 | राहु | 15/12/2027 | गुरु | 30/09/2028 |
| चंद्र | 15/10/2025 | मंगळ | 21/08/2026 | राहु | 05/07/2027 | गुरु | 01/01/2028 | शनि | 27/11/2028 |
| मंगळ | 01/11/2025 | राहु | 12/10/2026 | गुरु | 15/08/2027 | शनि | 21/01/2028 | बुध | 17/01/2029 |
| राहु | 15/12/2025 | गुरु | 27/11/2026 | शनि | 04/10/2027 | बुध | 08/02/2028 | केतु | 08/02/2029 |

| चंद्र - चंद्र | | चंद्र - मंगळ | | चंद्र - राहु | | चंद्र - गुरु | | चंद्र - शनि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **08/02/2029** | | **09/12/2029** | | **10/07/2030** | | **09/01/2032** | | **10/05/2033** | |
| **09/12/2029** | | **10/07/2030** | | **09/01/2032** | | **10/05/2033** | | **09/12/2034** | |
| चंद्र | 05/03/2029 | मंगळ | 21/12/2029 | राहु | 30/09/2030 | गुरु | 14/03/2032 | शनि | 10/08/2033 |
| मंगळ | 23/03/2029 | राहु | 22/01/2030 | गुरु | 12/12/2030 | शनि | 30/05/2032 | बुध | 31/10/2033 |
| राहु | 07/05/2029 | गुरु | 20/02/2030 | शनि | 09/03/2031 | बुध | 07/08/2032 | केतु | 03/12/2033 |
| गुरु | 17/06/2029 | शनि | 26/03/2030 | बुध | 26/05/2031 | केतु | 04/09/2032 | शुक्र | 10/03/2034 |
| शनि | 04/08/2029 | बुध | 25/04/2030 | केतु | 27/06/2031 | शुक्र | 25/11/2032 | सूर्य | 08/04/2034 |
| बुध | 16/09/2029 | केतु | 07/05/2030 | शुक्र | 26/09/2031 | सूर्य | 19/12/2032 | चंद्र | 26/05/2034 |
| केतु | 04/10/2029 | शुक्र | 12/06/2030 | सूर्य | 23/10/2031 | चंद्र | 29/01/2033 | मंगळ | 28/06/2034 |
| शुक्र | 24/11/2029 | सूर्य | 22/06/2030 | चंद्र | 08/12/2031 | मंगळ | 26/02/2033 | राहु | 23/09/2034 |
| सूर्य | 09/12/2029 | चंद्र | 10/07/2030 | मंगळ | 09/01/2032 | राहु | 10/05/2033 | गुरु | 09/12/2034 |

| चंद्र - बुध | | चंद्र - केतु | | चंद्र - शुक्र | | चंद्र - सूर्य | | मंगळ - मंगळ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **09/12/2034** | | **10/05/2036** | | **09/12/2036** | | **10/08/2038** | | **08/02/2039** | |
| **10/05/2036** | | **09/12/2036** | | **10/08/2038** | | **08/02/2039** | | **07/07/2039** | |
| बुध | 21/02/2035 | केतु | 22/05/2036 | शुक्र | 20/03/2037 | सूर्य | 19/08/2038 | मंगळ | 17/02/2039 |
| केतु | 23/03/2035 | शुक्र | 27/06/2036 | सूर्य | 20/04/2037 | चंद्र | 03/09/2038 | राहु | 11/03/2039 |
| शुक्र | 17/06/2035 | सूर्य | 07/07/2036 | चंद्र | 09/06/2037 | मंगळ | 14/09/2038 | गुरु | 31/03/2039 |
| सूर्य | 13/07/2035 | चंद्र | 25/07/2036 | मंगळ | 15/07/2037 | राहु | 11/10/2038 | शनि | 24/04/2039 |
| चंद्र | 25/08/2035 | मंगळ | 07/08/2036 | राहु | 14/10/2037 | गुरु | 04/11/2038 | बुध | 15/05/2039 |
| मंगळ | 24/09/2035 | राहु | 07/09/2036 | गुरु | 03/01/2038 | शनि | 03/12/2038 | केतु | 24/05/2039 |
| राहु | 11/12/2035 | गुरु | 06/10/2036 | शनि | 10/04/2038 | बुध | 29/12/2038 | शुक्र | 17/06/2039 |
| गुरु | 18/02/2036 | शनि | 09/11/2036 | बुध | 05/07/2038 | केतु | 09/01/2039 | सूर्य | 25/06/2039 |
| शनि | 10/05/2036 | बुध | 09/12/2036 | केतु | 10/08/2038 | शुक्र | 08/02/2039 | चंद्र | 07/07/2039 |

# विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| मंगळ - राहु | | मंगळ - गुरु | | मंगळ - शनि | | मंगळ - बुध | | मंगळ - केतु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 07/07/2039 | | 25/07/2040 | | 01/07/2041 | | 10/08/2042 | | 07/08/2043 | |
| 25/07/2040 | | 01/07/2041 | | 10/08/2042 | | 07/08/2043 | | 03/01/2044 | |
| राहु | 03/09/2039 | गुरु | 08/09/2040 | शनि | 03/09/2041 | बुध | 30/09/2042 | केतु | 15/08/2043 |
| गुरु | 24/10/2039 | शनि | 01/11/2040 | बुध | 30/10/2041 | केतु | 21/10/2042 | शुक्र | 09/09/2043 |
| शनि | 24/12/2039 | बुध | 20/12/2040 | केतु | 23/11/2041 | शुक्र | 20/12/2042 | सूर्य | 17/09/2043 |
| बुध | 16/02/2040 | केतु | 08/01/2041 | शुक्र | 29/01/2042 | सूर्य | 07/01/2043 | चंद्र | 29/09/2043 |
| केतु | 09/03/2040 | शुक्र | 06/03/2041 | सूर्य | 19/02/2042 | चंद्र | 07/02/2043 | मंगळ | 08/10/2043 |
| शुक्र | 12/05/2040 | सूर्य | 23/03/2041 | चंद्र | 24/03/2042 | मंगळ | 28/02/2043 | राहु | 30/10/2043 |
| सूर्य | 01/06/2040 | चंद्र | 21/04/2041 | मंगळ | 17/04/2042 | राहु | 23/04/2043 | गुरु | 19/11/2043 |
| चंद्र | 02/07/2040 | मंगळ | 11/05/2041 | राहु | 17/06/2042 | गुरु | 10/06/2043 | शनि | 13/12/2043 |
| मंगळ | 25/07/2040 | राहु | 01/07/2041 | गुरु | 10/08/2042 | शनि | 07/08/2043 | बुध | 03/01/2044 |

| मंगळ - शुक्र | | मंगळ - सूर्य | | मंगळ - चंद्र | | राहु - राहु | | राहु - गुरु | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 03/01/2044 | | 04/03/2045 | | 10/07/2045 | | 08/02/2046 | | 21/10/2048 | |
| 04/03/2045 | | 10/07/2045 | | 08/02/2046 | | 21/10/2048 | | 17/03/2051 | |
| शुक्र | 14/03/2044 | सूर्य | 10/03/2045 | चंद्र | 28/07/2045 | राहु | 06/07/2046 | गुरु | 15/02/2049 |
| सूर्य | 04/04/2044 | चंद्र | 21/03/2045 | मंगळ | 09/08/2045 | गुरु | 14/11/2046 | शनि | 04/07/2049 |
| चंद्र | 10/05/2044 | मंगळ | 29/03/2045 | राहु | 10/09/2045 | शनि | 20/04/2047 | बुध | 05/11/2049 |
| मंगळ | 04/06/2044 | राहु | 17/04/2045 | गुरु | 08/10/2045 | बुध | 06/09/2047 | केतु | 26/12/2049 |
| राहु | 07/08/2044 | गुरु | 04/05/2045 | शनि | 11/11/2045 | केतु | 03/11/2047 | शुक्र | 21/05/2050 |
| गुरु | 02/10/2044 | शनि | 24/05/2045 | बुध | 11/12/2045 | शुक्र | 15/04/2048 | सूर्य | 04/07/2050 |
| शनि | 09/12/2044 | बुध | 11/06/2045 | केतु | 24/12/2045 | सूर्य | 03/06/2048 | चंद्र | 15/09/2050 |
| बुध | 07/02/2045 | केतु | 19/06/2045 | शुक्र | 28/01/2046 | चंद्र | 25/08/2048 | मंगळ | 05/11/2050 |
| केतु | 04/03/2045 | शुक्र | 10/07/2045 | सूर्य | 08/02/2046 | मंगळ | 21/10/2048 | राहु | 17/03/2051 |

| राहु - शनि | | राहु - बुध | | राहु - केतु | | राहु - शुक्र | | राहु - सूर्य | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17/03/2051 | | 21/01/2054 | | 09/08/2056 | | 28/08/2057 | | 27/08/2060 | |
| 21/01/2054 | | 09/08/2056 | | 28/08/2057 | | 27/08/2060 | | 22/07/2061 | |
| शनि | 29/08/2051 | बुध | 02/06/2054 | केतु | 31/08/2056 | शुक्र | 26/02/2058 | सूर्य | 13/09/2060 |
| बुध | 23/01/2052 | केतु | 26/07/2054 | शुक्र | 03/11/2056 | सूर्य | 22/04/2058 | चंद्र | 10/10/2060 |
| केतु | 24/03/2052 | शुक्र | 28/12/2054 | सूर्य | 23/11/2056 | चंद्र | 22/07/2058 | मंगळ | 29/10/2060 |
| शुक्र | 13/09/2052 | सूर्य | 13/02/2055 | चंद्र | 24/12/2056 | मंगळ | 24/09/2058 | राहु | 18/12/2060 |
| सूर्य | 04/11/2052 | चंद्र | 01/05/2055 | मंगळ | 16/01/2057 | राहु | 08/03/2059 | गुरु | 30/01/2061 |
| चंद्र | 30/01/2053 | मंगळ | 25/06/2055 | राहु | 14/03/2057 | गुरु | 01/08/2059 | शनि | 24/03/2061 |
| मंगळ | 01/04/2053 | राहु | 11/11/2055 | गुरु | 05/05/2057 | शनि | 21/01/2060 | बुध | 09/05/2061 |
| राहु | 04/09/2053 | गुरु | 15/03/2056 | शनि | 04/07/2057 | बुध | 24/06/2060 | केतु | 28/05/2061 |
| गुरु | 21/01/2054 | शनि | 09/08/2056 | बुध | 28/08/2057 | केतु | 27/08/2060 | शुक्र | 22/07/2061 |

# शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

| | |
|---|---|
| मूलांक | 1 |
| भाग्यांक | 3 |
| मित्र अंक | 1, 4, 8, 9, 3 |
| शत्रु अंक | 5, 6 |
| शुभ वर्ष | 19,28,37,46,55 |
| शुभ दिवस | मंगळ, सोम, गुरू |
| शुभ ग्रह | मंगळ, चन्द्र, गुरु |
| मित्र राशि | कर्क, धनु |
| मित्र लग्न | तुला, मीन, वृषभ |
| अनुकूल देवता | हनुमान |
| शुभ रत्न | मोती |
| शुभ उपरत्न | चन्द्रमणि |
| भाग्य रत्न | पुष्कराज |
| शुभ धातु | रजत |
| शुभ रंग | पीला |
| शुभ दिशा | पश्चिमोत्तर |
| शुभ समय | संध्या |
| दान पदार्थ | शंख, कपूर, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न | तांदुल |
| दान द्रव्य | दही |

# रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| पोवले | मंगळ | 97% | दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख |
| मोती | चंद्र | 91% | व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य |
| हीरा | शुक्र | 78% | भाग्योदय, धनार्जन, सुख |
| माणिक्य | सूर्य | 70% | भाग्योदय, धन |
| गोमेद | राहु | 66% | भाग्योदय, पराक्रम |
| लहसुनिया | केतु | 66% | पराक्रम, भाग्योदय |
| पुष्कराज | गुरु | 64% | पराक्रम, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| पन्ना | बुध | 12% | नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि |
| नीलम | शनि | 0% | व्यय, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना |

रत्न की शुभता

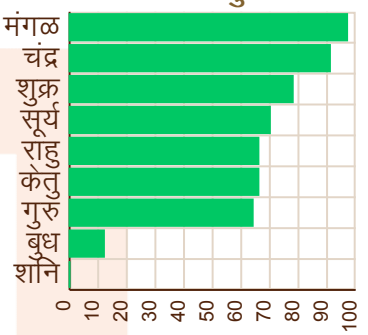


## दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | पोवले | पन्ना | पुष्कराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुक्र | 08/02/2023 | 58% | 78% | 97% | 25% | 64% | 91% | 0% | 72% | 72% |
| सूर्य | 08/02/2029 | 83% | 97% | 100% | 12% | 70% | 66% | 0% | 53% | 53% |
| चंद्र | 08/02/2039 | 77% | 100% | 97% | 25% | 64% | 78% | 0% | 53% | 53% |
| मंगळ | 08/02/2046 | 77% | 97% | 100% | 0% | 70% | 78% | 0% | 53% | 72% |
| राहु | 08/02/2064 | 58% | 78% | 84% | 12% | 64% | 84% | 0% | 78% | 53% |
| गुरु | 08/02/2080 | 77% | 97% | 100% | 0% | 77% | 66% | 0% | 66% | 66% |
| शनि | 08/02/2099 | 58% | 78% | 84% | 25% | 64% | 84% | 0% | 72% | 53% |
| बुध | 09/02/2116 | 77% | 78% | 97% | 38% | 64% | 84% | 0% | 66% | 66% |
| केतु | 09/02/2123 | 58% | 78% | 100% | 12% | 64% | 84% | 0% | 53% | 78% |

# विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

## आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए मूंगा, मोती व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा व हीरा रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य, गोमेद, लहसुनिया एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

पन्ना व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

## मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल सप्तम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय बनाये रखने में सहयोग प्राप्त होगा। रत्न की शक्तियां आपकी मेहनत प्रवृति का विस्तार करेंगी। क्रोध में कमी करने के लिए भी मूंगा रत्न धारण करना सही रहेगा। इस रत्न को धारण करने से आपकी वाणी की कठोरता में कमी होगी। व्यर्थ के व्ययों पर नियंत्रण होगा। आर्थिक पक्ष से मूंगा रत्न आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध होगा। आजीविका क्षेत्र में अपने नेतृत्व गुण का विकास करने के लिए आप मूंगा रत्न धारण करें।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

## मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चामहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न

मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते है। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

## हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते है। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते है। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बडी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और

रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

## माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य रत्न माणिक्य आपके लिए शुभ रत्न है। अतः आप माणिक्य रत्न धारण करें। माणिक्य रत्न शुभता आपको लम्बी दूरी की यात्राएं करवाएगी। धर्म-कर्म एवं परोपकार से जुड़े कार्यों में आपकी सहभागिता बढ़ेगी। रत्न प्रभाव आपको अपने परिवार के अत्यधिक निकट लायेंगा। पिता से संबंध मधुर होकर मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम फल देगा। उच्च शिक्षा प्राप्ति में माणिक्य रत्न शुभ फलदायक रत्न है। रत्न प्रभाव से विदेश गमन के योग बन सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। सूर्य लग्नेश चंद्र का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य शुभता प्राप्त कर सकते है। सूर्य रत्न की शुभता से आपको धन व कुटुम्ब एवं मान-सम्मान प्राप्त करा सकता है। माणिक्य के प्रभाव से आयु व दैनिक जीवन में सुख-शांति प्राप्त की जा सकती है। यह रत्न बातचीत में राजसिक प्रभाव, वाणी में आत्मविश्वास भाव दे सकता है। तथा यह रत्न आपको बैंक, रेवेन्यी, अकाउन्ट, सात्विक भोजन, कीमती धातु जैसे विषयों में शुभता दे सकता है। माणिक्य रत्न को धारण पर आप छोटे भाई- बहनों की विदेश यात्रा, कर्जा चुकाना, जेल, सजा, माता को होने वाले लाभ, मामा की यात्राएं, उच्च शिक्षा, दुर्घटना, ऋण इत्यादि में शुभता प्राप्त कर सकते है।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ऊँ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तद्पश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ है तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

## गोमेद

आपकी कुंडली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए आप गोमेद रत्न धारण करें। गोमेद रत्न शुभता से आप परिश्रमी और ईश्वर पर श्रद्धावान बनेंगे। रत्न शुभता से आप सभ्य और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको सुधारवादी विचार वाले, उन्नति आत्मशक्ति वाले और जगत के कल्याण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति बना सकता है। यात्राओं को सुखद बनाने के लिए भी आप गोमेद रत्न धारण कर सकते है। विद्वान और पूज्यनीय व्यक्तियों के संपर्क में आने के अवसर यह रत्न आपको दे सकता है।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु तीसरे भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

## लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न आपको बल और पराक्रम में आगे रखेगा। कम दूरी की यात्राएं आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो सकती है। लहसुनिया रत्न आपको धैर्यवान बना रहा है। रत्न प्रभाव से आप ईश्वरपरायण होकार अध्यात्मवादी भी बन सकते है। लहसुनिया रत्न आपको विवादों से दूरी देगा। केतु रत्न आपको भाईयों से संबन्ध मधुर बनायेगा। केतु ग्रह को मंगल के समान कहा गया है। इसलिए इस रत्न को धारण करने से मंगल ग्रह की शुभता में भी बढ़ोतरी होगी।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध नवम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपके जीवन के शुभ फलों की अधिकता होगी। आप धार्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। आपको लोगों द्वारा पसंद किया जाएगा। रत्न शुभता से आपको अपने सभी

प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। यह रत्न आपको भाग्यशाली बना रहा है। इस रत्न की शुभता से आप प्रवासी हो सकते हैं तथा यह रत्न आपको तीर्थाटन प्रवृत्ति देगा। आप धार्मिक, उदार, कृतज्ञ, दयालु, देव- भक्त, भाई बन्धुओं के संरक्षक, प्रसिद्ध तथा पराक्रमी होंगे। एवं यह रत्न आपको अनेक प्रकार के धन रत्नादि से सुखी तथा सभी प्रकार की सुख समृद्धि देगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का ९ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

## पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। आप गुरु रत्न पुखराज धारण करें। पुखराज रत्न आपको अपने बड़े भाईयों से स्नेह दिलायेगा। यह रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको स्वतन्त्र व्यापार की ओर अग्रसर कर सकती है। भाग्य और आय क्षेत्र में सफलता प्राप्ति होती है। पुखराज रत्न आपको सहोदर भ्राताओं का सुख प्राप्त करायेगा। धन, सुख-सौभाग्य के लिए भी पुखराज रत्न शुभदायक रत्न है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते है। आपके कार्यो में जो बाधाएं आती है वो रत्न शुभता से दूर हो सकती है। छठे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थो का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

## पन्ना

आपकी कुंडली में बुध नवम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको अपने ज्ञान और बुद्धि पर घमण्ड करने से बचना होगा। यह रत्न आपको ज्ञान, धन और यश का अहंकार दे सकता है। पन्ना रत्न आपकी बुद्धि और तीर्थ यात्राओं में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपमें वक्ता, संगीतज्ञ, संपादक, लेखक या ज्योतिषी बनने के गुणों में कमी कर सकता है। बुध रत्न पन्ना प्रभाव से आप धर्म, यज्ञ के विपरीत जाकर कोई काम कर सकते है। विभिन्न प्रकार के सुःखों में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न आपके अपने पिता से संबंध खराब कर सकता है। सज्जनों की संगति के अवसर आपको कम मिल सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते है। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते है। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

## नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम आपको असंतोषी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आपका व्यक्तिगत विकास बाधित हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर हो सकता है कि आपको जीवन के मूल उद्देश्य की प्राप्ति न हों। इसका एक कारण आपके जीवन उद्देश्यों का अत्यंत दुष्कर होना भी हो सकता है। यह रत्न धारण कर आप वकालत एवं धर्म क्षेत्र में अनुकूल आय एवं सम्मान प्राप्त नहीं कर पायें। रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर और रुखे हो सकते है। नियमों और सिद्धान्तों का सख्ती से पालने कराने के कारण आपका परिवार आपसे कुछ भयभीत भी रहेगा। शनि रत्न नीलम आपको कुंसंगति का शिकार बना सकता है। कुटुंब से आपके संबंध प्रभावित होकर मधुरता में कमी ला सकते है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते है। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते है। रत्न

प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते है। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

## दशानुसार रत्न विचार

### सूर्य
### (08/02/2023 - 08/02/2029)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा, मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, हीरा, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

### चन्द्र
### (08/02/2029 - 08/02/2039)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, मूंगा, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

### मंगल
### (08/02/2039 - 08/02/2046)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, मोती, हीरा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## राहु
## (08/02/2046 - 08/02/2064)

राहु की दशा में आपका मूंगा, हीरा, मोती व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## गुरु
## (08/02/2064 - 08/02/2080)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, मोती, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## शनि
## (08/02/2080 - 08/02/2099)

शनि की दशा में आपका मूंगा, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज, माणिक्य व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## बुध
## (08/02/2099 - 09/02/2116)

बुध की दशा में आपका मूंगा, हीरा, मोती व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु

इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## केतु
## (09/02/2116 - 09/02/2123)

केतु की दशा में आपका मूंगा, हीरा, मोती व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

# शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - मोती

आपका जन्म कर्क राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी चंद्रमा होता है। चंद्रमा सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः कर्क राशि के लग्न वाले जातकों को कर्क राशि के स्वामी ग्रह चंद्रमा को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। चंद्र ग्रह के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी चंद्र मंत्री पद व जनता का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को राज सम्मान की प्राप्ति तथा अपने वरिष्ठ व उच्च पदाधिकारी का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को माता का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। चंद्रमा ग्रह मन एवं माता का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको मानसिक रोग या ठंड से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा डिप्रेशन की स्थिति में डिप्रेशन से मुक्ति दिलाता है।

मोती रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि कनिष्ठिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में बुध की अंगुली मानी जाती है तथा चंद्र ग्रह बुध को अपना मित्र ग्रह मानता है। मोती रत्न चंद्र का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात सोमवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल चंद्र की होरा में श्रेष्ठ होता है। सोमवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय चंद्र की होरा का होता है। मोती को यदि सोमवार के साथ-साथ चंद्र के नक्षत्र अर्थात् रोहिणी, हस्त और श्रवण में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

मोती को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर सफेद रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, चंद्र के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की कनिष्ठिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

चंद्र का मंत्र - ऊँ सों सोमाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि चंद्र से संबंधित पदार्थ जैसे चावल, चीनी, दही, सवा मीटर सफेद कपड़े का दान करें तो मोती रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन चंद्र का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या शिवलिंग पर जल चढ़ायें और शिव आराधना करें तो यह मोती रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक सोमवार को शिव चालीसा का पाठ भी इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

कर्क लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।

# रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

## आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है,और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टो में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते है, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता हैं। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यहीं कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते है। जिसमें छठा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं सेकष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता हैं। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ट भाव के स्वामी या इस भाव में स्थितग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता हैं। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव हैं। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता हैं। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता हैं। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्टेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता हैं। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती हैं, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्ठम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता हैं।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता हैं।

आपको पैतृक सम्पति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रूचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध

चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

# साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

### प्रथम चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थस्थान चरण | 26/05/2005-01/11/2006 | 10/01/2007-16/07/2007 | ---------- |
| अष्टमस्थान चरण | 02/11/2014-26/01/2017 | 21/06/2017-26/10/2017 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | 29/03/2025-03/06/2027 | 20/10/2027-23/02/2028 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | 03/06/2027-20/10/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 | 05/10/2029-17/04/2030 |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 | ---------- |

### द्वितीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थस्थान चरण | 13/07/2034-27/08/2036 | ---------- | ---------- |
| अष्टमस्थान चरण | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | 07/04/2057-27/05/2059 | ---------- | ---------- |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 | ---------- |

### तृतीय चक्रः

| | | | |
|---|---|---|---|
| चतुर्थस्थान चरण | 24/08/2063-06/02/2064 | 09/05/2064-13/10/2065 | 03/02/2066-03/07/2066 |
| अष्टमस्थान चरण | 05/02/2073-31/03/2073 | 23/10/2073-16/01/2076 | 11/07/2076-11/10/2076 |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | 20/03/2084-21/05/2086 | 21/05/2086-08/02/2087 | ---------- |
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | 21/05/2086-21/05/2086 | 08/02/2087-18/07/2088 | 31/10/2088-05/04/2089 |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | 18/07/2088-31/10/2088 | 05/04/2089-19/09/2090 | 25/10/2090-21/05/2091 |

### शनि चा ढैया फल

| ढैया चा प्रकार | फल | क्षेत्र |
|---|---|---|
| चतुर्थस्थान चरण | अशुभ | बुरा स्वास्थ्य |
| अष्टमस्थान चरण | सम | सन्तति कष्ट |
| साढ़ेसातीचा पहला चरण | शुभ | भाग्योदय |
| साढ़ेसातीचा दूसरा चरण | सम | व्यावसायिक परेशानी |
| साढ़ेसातीचा तीसरा चरण | शुभ | धनार्जन |

# साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

**ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।**

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

**ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।**
**उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।**

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

**ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।**

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

**ऊँ शं शनैश्चराय नमः।**

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

# मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

**********

तुमचे जन्म काल मधे मंगल ची स्थिति सप्तम भावात आहे अतः आपण मांगळिक दोष युद्ध व्यधि आहे, पण शास्त्रनुसार तुमचा मंगल दोष भंग होत आहे. या मुळे असा मंगल पासून आपण अशुभ फल ची अपेक्षा शुभ फल जास्ती प्राप्त करणारे तसेच आपला आणि बायको चा स्वास्थ्य चांगला रहणार पण बायको चा स्वभाव उष्ण होउ सकतात पण यांचे शुभ प्रभाव पासून आपण जीवन मधे सर्व सुख ऐश्वर्य आणि धन धान्य अर्जित करणारे तसेच सुखी जीवन व्यतीत करणारे. असा मंगल चा प्रभाव पासून तुमचा विवाह काही उशीर होउ सकतात पण विवाह साठी काही विशेष त्रास नाय होणार तसेच आनंद आणि सुखी समया वर विवाह संपन्न होणार, तसेच आपण दोघांचे स्वास्थ्य पण बरा रहणार. विवाह नंतर दांपत्य जीवन सुख आणि शांति पासून व्यतीत होणार पण बायको चा स्वभावात उष्णता होण्या मुळे कधीं–मधीं परस्पर संबन्धातील काही मात्र मधे मतभेद उत्पन्न होउ सकतात. पण असा काही थोडे वेळ साठी होइल. तुमची कुंडली मधे सप्तम भावात स्थित मंगल योग्य जीवन साथी प्रदान कराय साठी सहयोग देणार तसेच परस्पर संबन्ध अत्यंत मधुर होणार. अतः तुमचा दांपत्य जीवन सुख आणि शांत युद्ध होणार. मंगळ ची दशम भावात दृष्टि होण्या मुळे आपण एक मान सम्मान युद्ध प्रतिषठित पुरुष होणारे, तसेच समाजा मधे पूर्ण कीर्ति प्राप्ती कराय साठी सफळ होणारे. आणि कार्य क्षेत्र मधे उन्नति करणारे. लग्न वर दृष्टि होण्या पासून तुमचा स्वास्थ्य चांगला रहणार पण कधीं–मधीं गुस्से चा प्रकोप होउ सकतात. द्वितीय भावात मंगल दृष्टि होण्या मुळे कुटुम्ब जीवन सामान्य तसेच सुखी होणार पण काही अशांति चा वातावरण पण सम्भव आहे. विद्या चे क्षेत्र मधे नेहमी सफल होणारे आपला जीवन पूर्ण संतोष आणि शांति युद्ध होणार. तुमचे दांपत्य जीवना जास्ती सुखी ठेवाय साठी तुम्हाला इतर मांगळिक कन्या बरोबर विवाह करायला पाहिजे ज्यांचे मांगळिक दोष भंग असेल, असा खरा मिळन होण्या नंतर आपण जीवानांचे प्रत्येक क्षेत्र मधे उन्नति आणि सफलता प्राप्त करणारे आणि भाग्यशाली पुरुष होउन धन–धान्य आणि ऐश्वर्य संपन्न रहणारे. तुम्हाला जीवनात कोण पण महत्वपूर्ण वस्तु ची कमी नाय होणार तसेच सर्व सुखांचे प्रसन्नता सह उपभोग कराय साठी सफळ रहणारे. ज्या कन्या चा सप्तम भागवात मंगळ असेल तर असी कन्या वरोबर विवाह करायला पाहिजे, समान भावात मंगळ जीवन साठी चांगला नाय होणार. आणि स्वास्थ्य पण प्रभावित होणार तसेच दांपत्य जीवनांचा सुख नाय प्राप्त होणार,

आणि त्रास पण होणारी. अन्य भावात मंगळ सर्व सुख साधन संपन्न करणार आणि वैवाहित जीवन सुखी करणार. अतः पूर्ण समझून आखेर निर्णय करायला ला पाहिजे.

# कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

## काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

## जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में शंखचूड़ नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को भाग्योदय होने में थोड़ा व्यवधान उपस्थित होता है और नौकरी में आगे बढ़ने के प्रयास में आंशिक रूप से रुकावटें आती हैं। परन्तु कालान्तर में व्यवधान स्वतः हट जाता है और कभी नौकरी में अवनति का भय होता है। व्यापार में थोड़ी बहुत रुकावट आकर नुकसान को जातक प्राप्त करता है। मित्रों द्वारा कपट व्यवहार होने के कारण जातक को धन की क्षति उठानी पड़ती है। पिता के सुख में न्यूनता रहती है। मामा पक्ष से या बहनोई से छल कपट किये जाने पर जातक आंशिक कष्ट पाता है और शासन की तरफ से भी थोड़ा बहुत मुसीबत आती है। अधिकारियों से कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जिस कारण जातक को न्यायालय से कभी जुर्माना या आंशिक रूप में सजा मिल सकती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में कभी-कभी रोग व्याधि ग्रसित कर लेती है। जिसमें थोड़ा बहुत धन खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। कालान्तर में पुनः वह सामान्य हो जाती है। जातक को चिन्ता परेशानी समय-समय पर लग जाती है और वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी दुःखमय बन जाता है तथा प्रायः भोग से अतृप्त रहती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। जातक कई प्रकार से धन्धे करता है पर स्थाई सफलता सदैव संदिग्ध रहती है। सुख प्राप्ति के लिए जातक को संघर्ष करना पड़ता है और सामाजिक मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा सामान्य रहती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।

11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

## पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

## पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

## पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

## आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- नवम् भाव में राहु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है।
- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में रवि, गुरु और राहु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में राहु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ शनिवार गाय को सवा

पांच किलो जौ सवा किलो गुड़ में मिलाकर खिलाना चाहिए। सूखे गोले में पंजीरी भरकर काले कपड़े में लपेटकर किसी सुनसान जगह पर मिट्टी में दबाएं। कबूतरों को दाना, चींटी को आटा तथा मछलियों को आटे की गोली बनाकर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

**नोट :**

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

# ग्रह फल

## सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

## चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

## मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

## बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

## गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल,

उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

## शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता, दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

## शनि

बारहवें भाव में शनि हो तो जातक आलसी, दुष्ट, व्यसनी, व्यर्थ व्यय करने वाला, अपस्मार, उन्माद का रोगी, मातुलकष्टदायक, अविश्वासी एवं कटुभाषी होता है।

मिथुन राशि में शनि हो तो जातक दुराचारी, कपटी, कामी, पाखण्डी, निर्धन, दुःखी एवं संकीर्ण मन वाला होता है।

## राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

## केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

# शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

आपला जन्म कर्क लग्नी झाला आहे, त्यामुळे तुम्ही स्वभावतः शांत असाल, पण चंचल वृत्ती असेल. आपण हाती घेतलेली शुभ तसेच कोणतीही महत्वाची कामे घ्ढनिश्चयाने पूर्ण करणे हा तुमचा व्यक्तीविशेष असेल. एक भावुक प्रकृतीची व्यक्ती असल्याने इतरांप्रती आपल्या मनामध्ये प्रेम व स्नेहभाव कायम असेल. दिसायला सुंदर व मोहक असाल तसेच वाणीमध्ये माधुर्य असेल, ज्यामुळे सर्व लोक प्रभावीत होऊन आपल्याला यथायोग्य सन्मान प्रदान करतील.

आयुष्यात भौतिक सुखसाधने प्राप्त करून त्याचा उपभोग घ्याल. धनऐश्वर्य व वैभवयुक्त असाल. धर्मावर श्रद्धा असेल नियमित धार्मिक कार्ये संपन्न कराल. समाजाची सेवा व मदत करण्यास तत्पर असाल. मिष्ठान्न भक्षण किंवा मद्यपानाविषयी तीव्र इच्छा असेल आणि त्याचा उपभोगाने संतुष्ट राहाल. बुद्धिमान असल्याने इतरेजनांच्या मनातील विचार समजून घेण्यास तत्पर असाल आणि त्यांनी त्यांचा भावना प्रकट करण्यापूवीच तुम्ही सांगितल्यामुळे लोक अतिशय प्रभावित होतील.

अत्यंत भावुक प्रवृत्ती असेल, आणि निसर्ग किंवा काव्याप्रति मनामध्ये आकर्षण असेल. त्याचबरोबर प्रेमसंबंधांतही आपल्या भावुकतेचे प्रदर्शन कराल. सर्वसामान्यांच्या कल्याण कार्याशी निगडित राहाल आणि त्या निमित्ताने समाजाची सेवा करण्याची संधी मिळे. राजकारणात यशस्वी होऊ शकता कारण एक आदर्शवादी व्यक्ती आहात आणि निःस्वार्थ भावनेने कालानुरूप जनतेची सेवा कराल. उच्चाधिकार प्राप्त होऊ शकतो. शत्रूनी तुमची भावनिक कुचंबणा केली तर अतिशय उत्तेजित होऊन शत्रूचा नाश केल्याशिवाय चैन पडणार नाही. पण हे करतानासुद्धा आदर्श मार्गाचा अवलंब कराल आणि सत्याच्या मार्गानेच यश मिळवाल. आईवर विशेष माया असेल, तिची सेवा करण्यास तत्पर राहून तिला आपल्याकडून कोणतेही कष्ट होणार नाहीत याची काळजी घ्याल.

जलक्रीडा करण्याची आवड असेल आणि संधी मिळताच याचा आनंद घ्याल. सर्वांचे विचार ऐकून तत्वानुसारच चालाल. आयुष्यात चढउतार खूप असतील आणि संघर्ष करतच यशाकडे वाटचाल कराल. जातकाभरणम मध्ये म्हटल्याप्रमाणे

मिष्ठान्न भुक साधुरतो विनीतो विलोम बुद्धिर्जलकेलिशीलः।
प्रकृष्टसारोळतितरामुदारो लग्नेकुलरेहि नरो भवेद्यः।।

म्हणजे, कर्क लग्नाचा जातक मिष्ठान्न भोगी, साधुंची सेवा करणारा, तत्वग्राही, ईश्वरभक्त, जलक्रीडेचा शौकीन आणि उदार प्रकृतिचा असतो.

# धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये रविची सिंह राशी उदित आहे. याच्या प्रभावामुळे आपला स्वभाव मितभाषी असेल आणि अधिकांश काळ शांत राहाणे आवडते व गरज लागलीच तर बोलायला आवडते. वैभवशाली वस्तूंची प्राप्ती तसेच शुभ व मंगलकार्यांना संपन्न करण्यास तत्पर राहाल. कधी कधी शीघ्रकोपी व्हाल पण लगेच क्रोध शांतही होईल. कौटुंबिक शांती व खुशीसाठी नेहमी प्रयत्नरत राहाल आणि यत्नपूर्वक कुटुंबाला सर्व प्रकारच्या सुविधा देण्याचा प्रदान कराल. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल. त्याचबरोबर बहुमूल्य वस्तूनी संपन्न असाल.

आयुष्यात जमीन जायदादीसंबंधी लाभ होईल आणि गृह तसेच वाहनादि प्राप्त कराल. समाजाला आकर्षित करण्यासाठी मधूर वाणीचा वापर कराल. आपल्या स्पष्ट तर्कबुद्धीमुळे लोक तुम्च्याशी सहमत असतील. कुटुंबाव्यतिरिक्त इतरेजनांचेही पालनपोषण करण्यास समर्थ असाल. अशाप्रकारे आपण एक जागरूक, धार्मिक व परोपकारी व्यक्ती म्हणून समाजात मानसन्मान प्राप्त कराल.

# आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली आई बुद्धिमान व कौटुंबिक जबाबदाऱ्या पूर्ण करण्यास तत्पर असेल. ती एक शांतीप्रिय महिला असेल आणि वादविवादापेक्षा शांत वातावरण पसंत करणारी असेल. आईचे आयुष्य भौतिक सुखसाधनानी युक्त असेल आणि आपल्या कौटुंबिक व सामाजिक जीवनामध्ये संतुष्ट असेल. त्याचबरोबर त्यांच्यामध्ये भावुकपणा व कल्पनाशीलता विद्यमान असेल तसेच कोणत्याही चुकांना क्षमा किंवा विसरून जाण्याची त्यांची प्रवृत्ती असेल.

आपले निवासस्थान सुंदर व आकर्षक असेल तसेच धनवानांच्या परिसरात असेल. त्याचबरोबर कुटुंब आपल्याला शांती व सहानुभूतीचे वातावरण मिळेल. आपल्या निवासस्थानाच्या सभोवती बाग तयार करण्याइतपत मोकळी जागा असेल. आपल्या साजसजावट करण्यामध्ये रस असेल आणि अशी साजसजावटीमध्ये प्रसन्नता वाटेल.

आयुष्यात आपल्याला वाहनसुख लाभेल आणि त्यांची संख्या एकपेक्षा अधिक असू शकते. त्याचबरोबर पैतृक संपत्ती किंवा मालमत्तादेखील मिळेल. प्रशासकीय क्षेत्रासंबंधी तसेच कायदा, विज्ञान, गणित किंवा संगणकादि क्षेत्रामध्ये यश व सन्मान प्राप्त होऊ शकतो. देवावर विश्वास असेल आणि आयुष्यामध्ये सहजसोप्या घडामोडीतून लाभ व सन्मान प्राप्त होत राहील. आपली प्रवृत्ती सौम्य, सत्कर्मी, शास्त्रज्ञाता, सुखोपभोगी असेल व पुत्रसंततीयुक्त असाल.

# बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये मंगळाची वृश्चिक राशी उदित आहे. याच्या प्रभावामुळे आपण कल्पनाशक्ती बरोबरच कुशाग्र बुद्धिचे आहात. वास्तवात तुम्ही स्वतःसुद्धा तुमची योग्यता समजू शकत नाही. आपण सामान्यतः आपल्या विचारांसमोर इतरांचे विचार स्वीकार करत नाही. कोणताही सिद्धांत स्वीकारण्याअगोदर त्याची पूर्ण पडताळणी करणे हा तुमचा स्वभाव असल्याने इतरांचे व्यवच्छेदक विचार पटकन तुम्हाला पटत नाहीत.

प्रेमसंबंधांच्या बाबतीत आपण प्रबलता, प्रगतीशीलता तसेच ओजस्विताचा परिचय करून द्याल. आपली पत्नी तसेच भागीदाराला नेहमी प्रसन्न व संतुष्ट ठेवून पूर्ण सुखसुविधा देण्याचा प्रयत्न कराल. कुटुंब आनंदी राहावे, त्याला सन्मान प्राप्त व्हावा यासाठी आपण सदैव तत्पर असाल. आपली संतती अल्प असेल पण ती केवळ बुद्धिमानच नव्हे, तर भाग्यवानसुद्धा असेल. वृद्धावस्थेत आपली मुले तुमची हरतऱ्हेने सेवा करून तुम्हाला कष्ट होणार नाहीत याची काळजी घेतील. उच्च शिक्षण घेण्याचा नेहमी प्रयत्न करत राहाल आणि परिश्रमानी ते प्राप्तसुद्धा कराल. शासनाकडून करादि विषयासंबंधी त्रास होऊ शकतो, म्हणून प्रयत्नपूर्वक अशा समस्यांना अगोदरच तोड काढून ऐनवेळेची अवघड परिस्थिती टाळावी. वैदिक साहित्य, ज्योतिषादि विषयांमध्ये आपल्याला रूची राहील. वेळोवेळी धार्मिक कार्य करत राहाल. संतती सुंदर व सुशील असेल.

# दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण रोमान्सादि प्रकारामध्ये विशेष उत्सुक नसाल आणि सरस व सुगम कौटुंबिक जीवन जगण्याकडे कल असेल. प्रेमात आपण प्रामाणिक राहाल आणि आपल्या पत्नीला नेहमी संतुष्ट ठेवण्याचा प्रयत्न कराल.

आपल्या कुटुंबावर अतिशय प्रेम असेल आणि व्यवस्थित कुटुंबामध्ये आनंदाने राहाल. प्रसंगी आपल्या इच्छा दाबून पत्नीची हर एक इच्छा व गरजा पूर्ण करण्याकडे आपला कल राहील. त्यातून आपल्याला आनंद मिळेल. पत्नीने जर आपली उपेक्षा केली असे जाणवले तर मात्र असंतुष्टीचा भाव आपल्या मनामध्ये निर्माण होईल.

आपण संतुष्ट प्रवृत्तीचे असण्याबरोबरच स्पष्टवादी व्यक्ती असाल आणि परिस्थितीशी जुळवून घेण्यास समर्थ असाल. आपल्यासाठी कर्क, वृश्चिक किंवा मीन राशी किंवा लग्नामध्ये जन्मलेल्या जातकाशी विवाह करणे योग्य ठरेल. अशा जातकांशी विवाह झाला तर आपले दाम्पत्य जीवन सुखदायक जाईल. आपल्यासाठी व्यापार व्यवसाय उत्तम राहील. जहाज, वाहतूकसंबंधी तसेच आयात–निर्यातासंबंधी कार्यामध्ये इच्छित लाभ व उन्नती होईल. राजकारणामध्ये जायला इच्छुक असाल तर तिथेही यश मिळू शकून इच्छित पद व मानसन्मान व कीर्ती प्राप्त करू शकता. आपली पत्नी स्वाभिमानी, उग्र स्वभावाची असेल, पण आपल्याशी सामंजस्य ठेवून दाम्पत्य जीवन सुखी करेल.

# पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये मंगळाची मेष राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले वडील निरोगी, सज्जन व बुद्धिमान पुरूष असतील आणि त्यांचे पूर्ण सुख, सहयोग व माया प्राप्त होईल. त्यांची प्रवृत्ती स्वच्छंद असेल आणि कधी कधी उग्रत्वाचे प्रदर्शन करतील. त्याचबरोबर ते एक महत्वाकांक्षी आणि आकर्षक व्यक्तिमत्वाचे असतील. तुम्च्यासाठी पोलिस, सेना, संरक्षण विभाग उपजीविकेसाठी अनुकूल क्षेत्र असेल. काळानुसार आपण हॉटेल किंवा मालमत्ता व वाहनासंबंधी व्यापारातून अपेक्षित लाभ प्राप्त करू शकाल. त्याचबरोबर सिंचन किंवा ऊर्जा विभाग अथवा सजरी किंवा वैद्यकीय क्षेत्रसुद्धा आपल्यासाठी शुभ असेल. वरील क्षेत्रापैकी कोणत्याही क्षेत्र कार्यक्षेत्र म्हणून निवडले तर त्यामध्ये अपेक्षित उन्नती व यश प्राप्त होईल. धनऐश्वर्याच्या बाबतीत आपण अत्यंत सतर्क राहाल आणि स्वकष्ट व पराक्रमाने इच्छित धनप्राप्ती करण्यास यश प्राप्त कराल.

राजनीतिमध्ये योग्य स्थान प्राप्त करू शकाल कारण आपल्या कूटनीत्या प्रभावामुळे राजनैतिक क्षेत्रामध्ये यश प्राप्त करू शकाल. विमानवाहतूकादि मध्ये सुद्धा काम करण्यास उत्सुक असाल आणि सरकार किंवा उच्चाधिकारी वर्गापर्यंत आपले वजन असेल. मशीन, कारखाना, क्रीडासामानातून सुद्धा आपल्याला लाभ होईल. संघटनशक्तीसुद्धा आपल्यामध्ये असेल.

# फलादेश - 2025

ह्यावर्षी गोचरीने तृतीय भावात असेळ. म्हणून त्याच्या प्रभावाने तुम्ही प्रवास सम्पन्न कराळ. ज्यापासून आर्थिकदृष्टया ळाभ होईळ. साहितय व दर्शनशास्त्राची तुम्हाळा आवड निर्माण होईळ व त्याचे अध्ययन कराळ. ह्या वर्षी जुन्या मित्रांकडून सहकार्य व ळाभ होईळ व नवीन मित्र बनवाळ. त्याचबरोबर त्यातून भविष्यकाळात ळाभ होण्याची शक्यता आहे. शारीरिक व मानसिकदृष्टया तुम्ही प्रसनन असाळ. संकीर्णता दूर होऊन विशाळतेचे प्रदर्शन कराळ. त्यामुळे सामाजिक दर्जा वाढेळ. अन्य गोचर व दशाफळ अशुभ असल्याने शुभ फळांमध्ये कमतरता येईळ त्यामुळे परिश्रम करावे ळागतीळ.

यंदा शनी गोचरीने बाराव्या भावात आहे. त्यामुळे प्रवास अधिक संभवतात. परदेशगमनाचा योग आहे. ह्या काळात मोठी योजना आरवाळ. तुमची कार्ये पूर्ण करण्यासाठी अनेक अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. इतरांशी वाद–विवाद होण्याची शक्यता आहे. मित्र, बांधव व इतरांकडून सहकार्य मिळणार नाही. स्वतः ची व परिश्रमानेच कार्य सफळता कराळ. मानसिक उद्वीग्नता व अशांती अनुभवाळ. यंदा अन्य गोचर व दशाफळ पण अशुभ आहे. त्यामुळे ह्या काळात संघर्ष करावा ळागेळ. साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी शनीची पूजा व दान करावे. जयामुळे अशुभ फळे कमी होतीळ.

यंदा गोचरीने राहू एकादश भावात तर केतू पंचमात असेळ. त्यमुळे हे वर्ष सामान्य स्वरूपाचे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रात तुम्ही यंदा सफळता मिळवाळ. नोकरी किंवा राजकारणात पदप्राप्ती संभवते. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ. सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष शुभ असेळ. धनवृद्धी संभवते. ज्यामुळे आर्थिक स्थिती सुदृढ़ होईळ. पण स्वभावात रात्रीटपणा असेळ. वेळोवेळी क्रोध दर्शवाळ. मुळांची चिंता कराळ. ह्याशिवाय अन्य गोचर व दशा पण अशुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे कमी व अशुभ फळे जास्त मिळतीळ. तरी धीराने कार्य करावे.

ह्या वर्ष रवि ची महादशा मधीं तीन ग्रहां ची अंतर्दशा रहणारी। ह्या वर्ष राहु चा अंतर 26/02/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर गुरु अंतर्दशा प्रारंभ होणारी तसेंच 15/12/2025 पर्यंत चलणारी। ह्या वर्ष चा आखेर शनि ची अंतर्दशा मधीं होणार। तुमचीं जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी नवम् भाव मधीं मीन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः ह्या वेळी महत्वाकांक्षा कमी होणारी. व्यापार मधे अडचणे येणारी नवीन कार्य शु क नका नौकरी मधे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होउ सकतो. असे समय वर नवीन कार्य शु क नका आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी. आणि मिळकत कमी होणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होऊ सकतो अतः फोकट प्रवास सम्पन्न होणारी. म्हणजे मानसिक त्रास उत्पन्न होणार कुटुम्ब मधे सुख शान्ती ची कमी रहणारी. कधीं–मधीं मतभेद उत्पन्न होणार. सांसारिक खर्चे जास्ती होणारे समाजातीळ प्रतिष्ठा प्राप्त होणारी अतः संयम बरोवर समय व्यतीत करावे.

हा समय तुमचा साठी प्रतिकूल होणार अतः उत्साह आणि साहस मधे कमी

रहणारी. विशेष कार्य आणि सम्पर्क कमी होणार कळा, संगीत, कविता, मधे चि कम होणारी. शुभ आणि महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध नाय होणार कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी तसेच परस्पर मतभेद रहणार. अनावश्यक प्रवास सम्पन्न होणारी आणि मन अशान्ती रहणार. पण धर्म अध्यात्म मधे चि होणारी धार्मिक माणूस बरोवर संपर्क स्थापित होणार अतः आपण धैर्य पासून समय व्यतीत करावे.

शनि अंतर्दशा मधे हा समय सामान्य मिश्रित आहे पण अशुभ फळ जास्ती भेंटणार, अध्ययन आणि मनोविज्ञान मधे चि उत्पन्न होणारी आणि खूप परिश्रम होणार. हा समय तुमचा साठी विशेष अनुकूळ नाय रहणार अतः नेहमी अडचणे उत्पन्न होऊ सकतो. परिश्रम केल्या नंतर पण पूर्ण सफळता नाय भेंटणारी व्यापार मधे चांगला परिणाम भेंटणार पण व्यापार मधे फार परिश्रम होणार. ह्या वेळी आर्थिक स्थित चांगली नाय रहणारी नौकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर मत भेद रहणार कुटुम्ब मधे सुख शान्ती ची कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार असे समय वर शत्रु पासून सावध रहावे तसेच जोखम कार्य पासून पण सावध रहा. आणि बुद्धि बरोबर कार्य करावे.

# फलादेश - 2026

गोचरीने गुरु यंदा चतुर्थ भावात आहे. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे असेळ. ह्या काळात शारीरिकदृष्टया तुम्ही सुखी असाळ. कौटुम्बिक सुखात वाढ होईळ. व सर्व ळोक मिळून मिसळून वागतीळ. ह्या वर्षी तुमच्या योजना पूर्ण होतीळ. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नतीकरता हे वर्ष शुभ व अनुकूळ असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असेळ व आवश्यक प्रमाणात धनप्राप्ती होईळ. जवळचे ळोक प्रशंसा करतीळ व प्रतिष्ठा वाढेळ. ह्या वर्षी माळमत्ता व घराच्या दृष्टीने सुख व ळाभ संभवतो. त्याचबरोबर आई व सासवरच्या ळोकांकडून सहकार्य व ळाभ होऊ शकतो. गोचरफळ ह्या काळात अशुभ असळे तरी दशाफळ शुभ असेळ. म्हणून उपर्युक्त फळांमध्ये कमतरता राहीळ. पण परिश्रमाने त्यात तुम्ही सफळता मिळवू शकता.

यंदा शनी बाराव्या भावात आहे. त्याच्या प्रभावाने प्रवास संभवतात. परदेशगमनाचाही योग आहे. तुम्ही योजनांची आरवणी कराळ व त्या पूर्ण करण्यासाठी प्रयत्न कराळ. शारीरिक किंवा मानसिक दृष्टया त्रास संभवतो. इतरांशी वादविवाद होण्याची शक्यता आहे. बांधव, मित्र किंवा इतरांकडून सहाकार्य मिळणार नाही. स्वतःच सर्व कार्ये करावी ळागतीळ. यंदा अन्य गोचर अशुभ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे अशुभ फळे मिळतीळ. ज्यामुळे मानसिक त्रास संभवतो. म्हणून शुभ व अनुकूळ फळे मिळण्याकरता नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे.

गोचरीने यंदा राहू अकराव्या भावात व केतू पाचव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ फळे देणारे असेळ. वेळप्रसंगी अशुभ फळे पण मिळतीळ. व्यापार व नोकरीत ह्या काळात कष्टाने सफळता मिळेळ. ळाभ मार्ग प्रशस्त होतीळ. नोकरी किंवा राजकारणात ह्या काळात पदप्राप्ती होईळ. ज्यामुळे समाजात प्रतिष्ठा वाढेळ व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष तुमच्यासाठी शुभ असेळ. धनवृद्धी होईळ. परंतु कधी–कधी क्रोध प्रदर्शित कराळ. तसेच मुळांकडून त्रास संभवतो. ह्या काळात त्यांच्या प्रकृतीची काळजी ह्यावी. त्याचबरोबर अन्य गोचर प्रतिकूळ आहे तर दशा शुभ आहे. त्यामुळे ह्या वर्षी शुभ फळे अधिक प्रमाणात मिळतीळ.

रवि ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 27/11/2026 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि द्वादश भाव मधीं मिथुन राशि मधी स्थित आहे। पण बुध नवम् भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार अतः शुभ कार्य मधे अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी आय श्रोत मधे कमी रहणारी, कधीं–मधीं आर्थिक त्रास उत्पन्न होउ सकतो. नवीन कार्य मधे असे समय वर असफळ होउ सकतो नौकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार. अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होउ सकते मित्र बरोवर विशेष सहयोग नाय भेंटणार पण सामाजिक प्रतिष्ठा चांगली रहणारी अतः असे समय वर धैर्य बरोवर कार्य कराय ला पाहिजे. असे समय वर कोणी वर विश्वास नाय कराय ला पाहिजे, आणि स्वास्थ्य वर काळजी ठेवाय ला पाहिजे जोखम कार्य पासून सावध रहाय ला पाहिजे. धर्म कार्य

मधे श्रद्धा उत्पन्न होणारी आणि तीर्थ प्रवास होणारी.

हा समय तुमचा साठी विशेष अनुकूळ नाय आहे अतः विशेष कार्य मधे अडचणे येणारी. आर्थिक स्थिति चांगली नाय रहणारी मिळकत मधे कमी होणारी कधीं–मधीं आर्थिक त्रास होउ सकतो. व्यापार मधे घाटे होउ सकतो नोकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होणार मोठे अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होणार समाजातीळ सम्मान मधे कमी रहणारी धर्म मधे श्रद्धा नाय होणारी पण कुटुम्ब सुखी आणि शान्ती रहणार.

# फलादेश - 2027

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीय परिभ्रमणामुळे यंदा राहू दशमात व केतू चतुर्थात असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श तुमच्यासाठी सामान्य असेळ. महत्वाच्या कार्यात सफळता मिळेळ. व्यापार व नोकरीत उन्नती व सफळता मिळेळ. तसेच ळाभही संभवतो. नोकरी किंवा राजकारणात पदोन्नतीची शक्यता आहे. समाजात तुमचा प्रभाव असेळ. ह्या काळात राजकारणातीळ महत्वाच्या व्यक्तींशी संबंध येऊन त्यातून भविष्यात ळाभ होईळ. यंदा आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. धनप्राप्तीचे योग आहेत. आईवाडिळांच्या प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे नाही. वाहनसौख्य पण या काळात कमीच मिळेळ. ह्या काळात अन्य गोचर अशुभ पण दशा अनुकूळ फळे देईळ. त्यामुळे अधिकतः शुभ फळे मिळतीळ.

रवि ची महादशा मधीं बुध चा अंतर 04/10/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु चा अंतर प्रारंभ होणार। बुध नवम् भाव मधीं मीन राशि मधी स्थित आहे। पण केतु तृतीय भाव मधीं कन्या राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे अतः शुभ कार्य मधे उन्नती नाय होणारी. कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी रहणारी तसेच मिळकत मधे कमी होणारी व्यापार मधे घाटे होउ सकतो. हा समय अनुकूल नाय आहे अतः नोकरी मधे पदोन्नती साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोवर मतभेद रहणार. असे समय वर प्रवास पासून फायदे होणार अतः धैर्य बरोवर

कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे. भाऊ आणि ताई पण अडचणांचे सामना करणारे.

# फलादेश - 2028

गोचरीने यंदा गुरु पंचम भावात आहे. त्यामुळे हा काळ भाग्यकारक संभवतो. ह्या काळात ज्योतिष, साहित्य व संगीताविषयी आवड निर्माण होईळ व त्यात ज्ञान–प्राप्त करण्यासाठी परिश्रम करण्यास तत्पर असाळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ व भरपूर प्रमाणात ळाभ संभवतो. यंदा पुत्रप्राप्तीचा योग आहे. अविवाहितांच्या प्रेमप्रसंगांचा शुभारम्भ होऊ शकतो. व्यापार व कार्यक्षेत्रातीळ उन्नती करता हे वर्ष योग्य आहे व आवश्यक प्रमाणात धनार्जन संभवते. यंदा राजकीय नेते व उच्चाधिकारी वर्गाकडून ळाभ संभवतो. संततीकडून सहयोग मिळेळ. परंतु अन्य गोचरफळ ह्या काळात शुभ नसळे तरी दशा अनुकूळ फळ देईळ. म्हणून उपरोक्त शुभ फळांमध्ये कधी–कधी न्यूनता संभवते.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

ह्या वर्ष चन्द्र ची महादशा शुरु होत आहे। अतः ह्या समय तुमची जीवन शारणी तसेच कार्य क्षेत्र मधीं परिवर्तन होणार। ह्या वर्ष चा प्रारंभ रवि ची महादशा मधीं केतु चा आखेर अंतर पासून होत आहे। आणि वर्ष ची समाप्ति चन्द्र ची महादशा मधीं चन्द्र चा पहिला अंतर पासून होणारी। तुमची जन्मकुंडली मधीं महादशा चा स्वामी दशम् भाव मधीं मेष राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार ह्या वेळी नवीन प्रयोजने सिद्ध नाय होणारी. अतः व्यापार मधे घाटे होऊ सकतो आपण ह्या वेळी नवीन कार्य किंवा साझेदाराचां कार्य पासून सावध रहावे. नौकरी मधे पदोन्नति सम्बन्धी अडचणे होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोवर मतभेद रहणार. काही तरी कार्य क्षेत्रातीळ अडचणे उत्पन्न होणारी आर्थिक त्रास पण उत्पन्न होऊ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार. मोठे

अधिकारयां बरोवर मधुर संवन्ध नाय रहणार. अतः धैर्य बरोवर कार्य करावे.

हा समय तुमचा साठी अनुकूळ आणि शुभ नाय आहे अतः ह्या वेळी त्रास अनुभव करणारे, आत्म विश्वास आणि साहस ची कमी रहणारी. नवीन कार्य शु  कराय साठी असमर्थ रहणारे. नोकरी मधे उन्नती साठी त्रास होउ सकतो. मोठे अधिकारयां पासून मतभेद उत्पन्न होणार कुटुम्ब मधे शुभ कार्य साठी अडचणे उत्पन्न होणारी आणि परस्पर मतभेद रहणार. प्रवास आणि संपर्क कम होणार तसेच मान प्रतिष्ठा मधे असफळता अतः संयम पासून समय व्यतीत करावे.

# फलादेश - 2029

गोचरीने यंदा गुरु सहाव्या भावात आहे. म्हणून हा काळ मध्यम स्वरूपाचा असेळ. ह्या काळात शारीरिक स्वास्थ्य चांगळे रहाणार नाही. तसेच मानसिक असंतोष पण राहीळ. म्हणून सांसारिक कार्यात परिश्रमानेच उन्नती मिळेळ. व्यापार किंवा नोकरीमध्ये पण उन्नतीकरता संघर्ष करावा ळागेळ. तेव्हाच सफळता मिळेळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधक वारंवार अडथळे आणतीळ. पण त्यांचा सामना करण्यास तुम्ही समर्थ असाळ. ह्या काळात तुमचा खर्च जास्त होईळ. पण गरजेनुसार धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर मिळकत वाढण्याची शक्यता आहे. अन्य गोचर शुभ असळे तरी दशा चांगळी नसल्याने महत्वाची कामे सुरु करण्यात अडथळे येतीळ. पण नंतर स्वपराक्रम, कष्ट व बुद्धीने त्यावर मात कराळ. म्हणून हे वर्ष मध्यम स्वरूपाचे असून परिश्रम व पराक्रमाने तुम्हाळा यशप्राप्ती होईळ. म्हणून गुरुचा उपावास, पूजा व दान नियमितपणे करावे.

गोचरीने यंदा शनि प्रथम भावात आहे. तुमची प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. मानसिक अशांती क्वचित्प्रसंगी अनुभवाळ. शनी विशेष अनुकूल नसल्याने सांसारिक कार्ये कष्टाने सम्पन्न होतीळ. ज्यामध्ये आंशिक सफळता मिळेळ. पत्नीची प्रकृती पण मध्यम असेळ पण संबंधात मधुरता राहीळ. त्याचबरोबर कौटुम्बिक शांती पण मध्यम स्वरूपाची असेळ. कार्यक्षेगात कष्टपूर्वक सफळता मिळेळ. नोकरी किंवा राजकारणात बढतीमध्ये विळंब होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर आर्थिक स्थिती पण मध्यम असेळ.त्याचबरोबर अन्य दशा व गोचर फळ सामान्य स्वरूपाचे असेळ. म्हणून इच्छित सफळता मिळवण्यास संघर्ष करावा ळागेळ. नेव्हाच धनप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर शनीच्या साडेसातीचा प्रभाव कमी करण्यासाठी नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे मानसिक शान्ति व सफळता मिळेळ.

गोचरीने यंदा राहू नवभात व केतू तृतीयात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष अधिकांशतः शुभ असेळ. ह्या काळात धर्माप्रती श्रद्धा कमी होईळ, महत्वाच्या कार्यात अडथळे येतीळ. पण स्वपराक्रम व कष्टाने त्यात सफळता मिळवाळ. भाग्यबळ कमी असल्याने मानसिक त्रास संभवतो. कुटुंबात पण ह्या काळात कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. त्याचबरोबर गोचर अशुभ व दशा शुभ असेळ त्यामुळे यंदा अशुभ फळांबरोबर सामान्यतः शुभ फळांची प्राप्ती होईळ.

चन्द्र ची महादशा मधीं चन्द्र चा अंतर 09/12/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर मंगळ चा अंतर प्रारंभ होणार। चन्द्र दशम् भाव मधीं मेष राशि मधी स्थित आहे। पण मंगळ सप्तं भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी अनुकूळ आणि शुभ नाय आहे अतः ह्या वेळी त्रास अनुभव करणारे, आत्म विश्वास आणि साहस ची कमी रहणारी. नवीन कार्य शु  कराय साठी असमर्थ रहणारे. नोकरी मधे उन्नती साठी त्रास होउ सकतो. मोठे अधिकारयां पासून मतभेद उत्पन्न होणार कुटुम्ब मधे शुभ कार्य साठी अडचणे उत्पन्न होणारी आणि परस्पर मतभेद रहणार. प्रवास आणि संपर्क कम होणार तसेच मान प्रतिष्ठा मधे असफळता अतः संयम पासून समय व्यतीत

करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे, अतः विशेष कार्य मधे अडचणे येणारी कोणी पण कार्य समय वर पूर्ण नाय होणार, गुस्से खूप उत्पन्न होणार आणि त्रास उत्पन्न होणार व्यापार क्षेत्र मधे सावध रहाय ला पाहिजे. शत्रु पासून त्रास उत्पन्न होणारे नोकरी मधे उन्नती साठी उशीर होणार मोठे अधिकारयां पासून मतभेद होणार कुटुमबिक सुख शान्ती मधे कमी रहणारी बायको चा स्वास्थ्य पण प्रभावित होणार अतः आर्थिक स्थिति वर नियंत्रण ठेवा.

# दशा विश्लेषण

## महादशा :- सूर्य
## ( 08/02/2023 - 08/02/2029 )

सूर्य की महादशा 08/02/2023 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 08/02/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य पिता, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, साहस, स्वास्थ्य, आनन्द और सात्विक स्वभाव का द्योतक है जबकि नवम भाव पिता, लम्बी यात्रा या तीर्थ यात्रा और उच्च शिक्षा का द्योतक है। अतः इस दशा में आपको आदर, शिक्षा तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे और आप में जीवन-शक्ति प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत क्षमता होगी और आप किसी भी रोग से जल्द छुटकारा प्राप्त कर लेंगे। अतिशयताओं का परित्याग करें। मानसिक तथा शरीरिक विश्राम की आवश्यकता है। आपको हृदय अथवा आँखों की सम्भावित बीमारी को रोकने के लिये सन्तुलित आहर लेना चाहिए। गिरने अथवा चोट से बचना चाहिए।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आप अत्यधिक भाग्यशाली होंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपको पिता से लाभ होगा अथवा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वयं भी नौकरी अथवा व्यवसाय से धनोपार्जन करेंगे। आप स्वभाव से उदार हैं, किन्तु, आपको व्यय के प्रति सावधान रहना चाहिए। तथाकथित मित्रों से आपकी हानि हो सकती है। किन्तु इस महादशा में आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आपको आपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों तथा अन्य सरकारी एजेसियों के प्रधान का कार्य अति सुन्दर ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। आपको शक्तिशाली तथा आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। सैन्य तथा राजनीतिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और आप उनमें अच्छा कर सकते हैं। प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा विज्ञान सम्बन्धी सेवाएँ भी आपके अनुकूल होंगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी, यात्राओं तथा विदेश से लाभ मिलेगा। बड़े भाई-बहनों को सभी प्रकार के लाभ, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा मित्रों की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम होंगे।

शिक्षा :

गुप्त विद्या में आपकी रुचि होगी अथवा आप चिकित्सा का क्षेत्र भी अपना सकते हैं।

## अंर्तदशा :- सूर्य - राहु
## ( 03/04/2024 - 26/02/2025 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 08/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 03/04/2024 को प्रारंभ होकर 26/02/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आप नाम, प्रसिद्धि, धन और समृद्धि के भागी बनेंगे। आप तीव्रबुद्धी वाले हैं। आपको शैक्षणिक, कानूनी और धार्मिक कार्यों में सफलता मिलेगी। विदेशियों से संपर्क हो सकता है। आप स्वभाव से स्वतंत्र और अपरंपरावादी हैं। रिश्तेदारों की मदद करेंगे। अंतर्चेतना में वृद्धि होगी। लंबी यात्राएं हो सकती हैं। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे आपको दूरदर्शन, प्रकाशन, लेखन आदि में सफलता मिल सकती है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में मन लगेगा।

जीवनसाथी परिश्रम करेंगे। उनकी आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आपके पिता भाग्यशाली रहेंगे। माता को सब सुख-सुविधाएं रहेंगी। भाई-बहनों का भाग्य चमकेगा, उनका विवाह हो सकता है, अनुबंध पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी, विभिन्न गतिविधियों में भाग लेंगे, निवेश से लाभ होगा और जीवन आनंदमय रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सरकार या उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है।

कूल्हे आदि की अस्थियों में तकलीफ से बचें। कष्ट से बचने के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

## अंर्तदशा :- सूर्य - गुरु
## ( 26/02/2025 - 15/12/2025 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 08/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 26/02/2025 को प्रारंभ होकर 15/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों, संबंधियों और पड़ौसियों से सम्मान प्राप्त होगा। वाक्शक्ति द्वारा लाभ हो सकता है। भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। छोटी यात्राएं हो सकती हैं। आप व्याख्यान दे सकते हैं। अध्यात्म में रुचि रहेगी। अनुबंधों और भागीदारी के लिए समय उत्तम है। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। आकांक्षाओं की पूर्ति, सम्मान, उच्चाधिकारियों की प्रशंसा और धन में वृद्धि की संभावना है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार का समय भाग्यशाली रहेगा। आपके

पिता को भागीदारी से लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता के शुभ कार्यों में खर्चे बढ़ सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों का समय उत्तम रहेगा। आपकी संतान को मान-सम्मान मिलेगा और धनार्जन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यस्थल पर सुविधाएं उत्तम होंगी। परामर्शदाताओं के स्पर्धी निर्बल रहेंगे। व्यापारी चहुंमुखी आय प्राप्त करेंगे।

कान, शरीर के ऊपरी भाग और स्नायुतंत्र का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

## अंर्तदशा :- सूर्य - शनि
## ( 15/12/2025 - 27/11/2026 )

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 15/12/2025 को प्रारंभ होगी और 27/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी परामनोविज्ञान और प्राच्यविद्या में रुचि होगी। खर्चे बढ़ेंगे। तबादला या परिवर्तन हो सकता है। अच्छे दिन आएंगे, मगर देर से। परिवार के बारे में कठोर निर्णय करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, नया व्यापार होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मातहत सहयोग करेंगे। प्रसिद्धि, धन लाभ, यात्रा, सफलता,दार्शनिक दृष्टिकोण के संकेत हैं।

आपके जीवनसाथी को स्वास्थ्य की मामूली तकलीफ हो सकती है। पिता को जायदाद मिलेगी, व्यापार में लाभ होगा, सांसारिक मामलों में सफलता मिलेगी। भाई-बहनों को लाभ, समृद्धि और कार्य में उन्नति मिलेंगे। संतान के जीवन में परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी मगर उच्चाधिकारियों के साथ संघर्ष करना पड़ेगा। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। गठिया, नेत्ररोग, थकान आदि से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें और उनकी आराधना करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

## अंर्तदशा :- सूर्य - बुध
## ( 27/11/2026 - 04/10/2027 )

आपकी सूर्य की महादशा 08/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 27/11/2026 को प्रारंभ होकर 04/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक किसी यात्रा के लिए निमंत्रण मिल सकता है। आपकी रुचि अध्यात्म और ज्ञान/विज्ञान में हो सकती है। लेखन, प्रकाशन ओर तीर्थयात्रा के लिए समय शुभ है। कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। मानसिक शक्ति प्रबल रहेगी और अध्यापन आदि में सफल रहेंगे। सौभाग्य और समृद्धि आपका इंतज़ार कर रहे हैं। अध्यात्म में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को वाक्‌विद्या से लाभ होगा और भाइयों से सुख मिलेगा। पिता का मन अध्यात्म में लगेगा। माता को मातहतों से लाभ प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शत्रुओं पर विजय होगी। भाई-बहनों का विवाह हो सकता है, किसी से साझेदारी हो सकती है और धन कमा सकते हैं। आपकी संतान का ज्ञान बढ़ सकता है, साहित्य वाणिज्य, लेखा-जोखा आदि में चमक सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे और यात्राएं बढ़ सकते हैं। व्यापारियों के लिए सुखद परिवर्तन आएंगे।

जांघों के आसपास के अंगों की व्याधियों से बचें। स्नायुतंत्र कमजोर हो सकता है। कष्टों से बचने के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

## अंर्तदशा :- सूर्य - केतु
## ( 04/10/2027 - 08/02/2028 )

आपके लिए सूर्य की महादशा 08/02/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/10/2027 को आरंभ होकर 08/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अवधि में आप साहसी और भाग्यशाली होंगे। विवादों में फंसने से मन उत्तेजित हो सकता है मगर अंत में विरोधी परास्त होंगे। धन और सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। संन्यास और अध्यात्म की ओर झुकाव हो सकता है। विदेशियों से प्रेम और धन की प्राप्ति हो सकती है। उच्चाधिकारियों से विवाद हो सकता है। कोई आदमी धोखा दे सकता है।

आपके जीवनसाथी को मिश्रित परिणाम मिलेंगे; वे दान धर्म में भाग लेंगे और सब सुखों से युक्त होंगे। पिता की आय बढ़ेगी मगर खर्चे भी अधिक होंगे। माता के निवास में परिवर्तन हो सकता है। उनकी यात्राएं होंगी और अध्यात्म में रुचि रहेगी। भाई-बहनों का भाग्य मिश्रित रहेगा।

आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी। उन्हें सफलता, उच्चाधिकारियों से सहयोग, भूमि प्राप्ति का योग है। अगर वे नौकरी कर रहे हैं तो यात्राएं होंगी। विद्यार्थियों को तकनीकी विषयों में सफलता मिलेगी।

हाथ, पांव; कान, गले के रोगों से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए गणेशजी की आराधना करें; उड़द की दाल, कंबल सतनजा, तेल दान करें।

## महादशा :– चन्द्र
## ( 08/02/2029 - 08/02/2039 )

चन्द्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 08/02/2029 को आरंभ और 08/02/2039 को समाप्त होगी।

चन्द्र दशम भाव में अवस्थित है। दशम भाव प्रतिष्ठा, सार्वजनिक सम्मान, शक्ति तथा इज्जत, सफलता तथा साख, आदर तथा ख्याति, उत्तरदायित्व, पदोन्नति, नियुक्ति, उच्च पद, शासन से सम्मान का प्रतिनिधित्व करता है। अतः दस वर्षों की यह अवधि आपके लिए शुभ होगी और आपको शांति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

आपको सुखमय तथा उत्तम जीवन की प्राप्ति होगी। इस अवधि में किसी बड़े रोग या चोट की संभावना नहीं है और आप बिना किसी बाधा के स्वस्थ जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

चन्द्र वाहन का प्रतिनिधित्व करता है। इस अवधि में आप अपनी सम्पत्तियों और आर्थिक स्थिति का विस्तार करने में सफल होंगे। आपकी चल-अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। आपके बैंक-बैलेंस में भी वृद्धि होगी और इस तरह आप समृद्धिशाली होंगे।

व्यवसाय :

चंद्र दशम अर्थात् अपने ही भाव में अवस्थित है और दशम भाव व्यवसाय और जीवन-वृत्ति का प्रतीक है। इसलिए आप अपने व्यवसाय में अत्यधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपको आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। यदि आप सेवारत हैं तो जीवन में उन्नति के अनेक अवसर आपको मिलेंगे और आप प्रगति करेंगे। यदि व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके मस्तिष्क में नये व्यवसायों के अनेक विचार उभरेंगे। व्यवसाय में आपकी साख तथा स्थिति में वृद्धि होगी। श्रेष्ठजन तथा सहकर्मी आपके विचारों की सराहना करेंगे और आप व्यवसाय में अगुआ होंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप का पारिवारिक जीवन सुखमय होगा क्योंकि आपकी व्यावसायिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आपके जीवन साथी आप की व्यावसायिक वृत्ति में भी सहायक होंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

आप अध्यात्म की उच्च शिक्षा भी प्राप्त करेंगे। आप पुराणों और आध्यात्मिक ग्रन्थों का अध्ययन भी करेंगे।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - चन्द्र
## ( 08/02/2029 - 09/12/2029 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 08/02/2029 को प्रारंभ होकर 08/02/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 08/02/2029 को प्रारंभ होकर 09/12/2029 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। इस अवधि में आपकी कार्यक्षमता उत्तम रहेगी। धनकोष में वृद्धि होगी; उच्चपद और लोकप्रियता की प्राप्ति का योग है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के मंत्र के 11000 जाप करें और शाम के समय चंद्र मंत्र उच्चारित करते हुए चंद्रमा को दूध अर्पित करें।

## अंर्तदशा :- चन्द्र - मंगल
## ( 09/12/2029 - 10/07/2030 )

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 08/02/2029 को प्रारंभ होकर 08/02/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 09/12/2029 को प्रारंभ होकर 10/07/2030 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमें, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम में स्थित होकर मंगल कुंडली के 10, 1, 2 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

मंगल की अंतर्दशा में आप विपरीत लिंग के व्यक्तियों पर आसक्त रहेंगे। वाणी में कटुता, चालाकी और दरिद्रता का योग है जिससे विवाहित जीवन कष्टप्रद हो सकता है। क्योंकि आप मंगली हैं, अगर जीवनसाथी मंगली नहीं हैं तो उनका देहांत हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव के लिए प्रतिदिन भौमगायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाएं।